A Daily News Magazine
भोपाल
गुरुवार, 05 दिसंबर, 2024

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-96 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

आर्थिकी को मजबूती देने वाले मिडिल क्लास की आवाज मुखर कैसे हो ?

कार्ति पी. चिदंबरम

भारत में मध्य वर्ग (मिडिल क्लास) की अक्सर अनदेखी की गई है और जिसे अब महज़ उपभोक्ता वर्ग के रूप देखा जाता है। भारत को वैश्विक आर्थिक ताकत के रूप में पेश करने का जो शोर मचाया जा रहा है, उसमें सारा ज़ोर फलते-फूलते कुलीन तबके और नई खोज करते तकनीकी केंद्रों पर है, जबकि देश के मिडिल-क्लास की लगभग कोई चर्चा नहीं की जाती।

हालांकि, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़, मिडिल-क्लास उपभोग, आर्थिक वृद्धि, और सामाजिक स्थिरता में अहम योगदान देता है।

फिर भी, ऐसी केंद्रीय भूमिका निभाने वाला मिडिल-क्लास बढ़ती महंगाई, बेहतरीन ज़रूरी सेवाओं के अपनी पहुंच से दूर होते जाने और अपनी आकांक्षाओं के प्रति इस आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था के प्रतिकूल रुख के कारण परेशान है। भारतीय मिडिल-क्लास को एजुकेशन, मेडिकल सर्विस, ज़मीन के मालिकाना हक और कानून व्यवस्था आदि के मामलों में कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। पैरेंट्स अपने बच्चों को अच्छी एजुकेशन दिलाने के लिए कर्ज़ लेते हैं या संपत्ति बेचते हैं, क्योंकि प्रतिष्ठित संस्थानों की फीस उनके बजट से बाहर होती है। मेडिकल सेवाओं को देखें तो मामूली इलाज भी इतना महंगा हो गया है कि उसका बोझ उठाना परिवारों को भारी पड़ रहा है, खासकर उन परिवारों के लिए जिन्होंने बीमा नहीं कराया है।

पुलिस से वास्ता तो मिडिल-क्लास को तकलीफों को केवल बढ़ाता है। घर बनाना भी एक ऐसी ख्वाहिश है, जिसे पूरा करना मिडिल-क्लास की पहुंच से बाहर है। भारत में ज़मीन-जायदाद के दाम इतने बढ़ गए हैं कि एक आम मिडिल-क्लास आदमी के लिए घर बनाना लगभग नामुमकिन हो गया है, बशर्ते वह उसे वसीयत में न मिला हो। जो लोग किसी तरह जायदाद बना भी लेते हैं उन्हें प्रदूषित हवा-पानी और कचरे के ढेर के साथ जीना पड़ता है। वहीं, भारत की परिवहन व्यवस्था भी उनकी परेशानियां बढ़ाती हैं। शहरों और गांवों की सड़कों का रख-रखाव इतना खराब है और उन पर ट्रैफिक का बोझ बढ़ता जा रहा है। तेज़ी से बढ़ते शहरीकरण में मोटर वाहनों की बढ़ती संख्या की रफ्तार ने सुविधाओं के विकास की गति को पीछे छोड़ दिया है जिसके कारण ट्रैफिक जाम की समस्या बढ़ गई है। भारत में कामकाज की संस्कृति वैश्विक पैमाने के हिसाब से काम के ज्यादा घंटे और कम सैलरी की वजह से शोषणकारी बनी हुई है। पासपोर्ट बनवाने की प्रक्रिया, पुलिस वेरिफिकेशन उनकी परेशानी बढ़ाती है। 2011 के बाद से करीब 20 लाख भारतीयों ने अपनी नागरिकता खत्म कर दी है। जो लोग देश में रह रहे हैं वो बेहतर भविष्य की उम्मीद लगाए रहते हैं, जबकि राष्ट्रीय विमर्श में उनकी आकांक्षाओं और सरोकारों को अक्सर जगह नहीं मिलती।

भारत का विस्तार करता मिडिल-क्लास अपनी बढ़ती आर्थिक प्रमुखता के बावजूद राजनीति से लापता है। एक समय उसे हाशिये पर पड़ा, राजनीतिक रूप से महत्वहीन तबका माना जाता था, जो आज़ादी के बाद राजनीति से लगभग कट गया था, लेकिन आर्थिक उदारीकरण के बाद के दौर में इसका नाटकीय विस्तार हुआ और यह तबका एक ताकतवर चुनावी ताकत के रूप में उभरा।

फिर भी, अपने बढ़ते राजनीतिक महत्व के बावजूद मध्यवर्ग राजनीतिक विमर्श में खुद को अक्सर हाशिये पर पड़ा महसूस करता रहा है। महंगाई, रोज़गार सुरक्षा, उत्तम सार्वजनिक सेवाओं आदि से जुड़े उसके आर्थिक सरोकारों को तो अधूरा छोड़ ही दिया गया है, राजनीतिक पार्टियां आर्थिक मसलों की अनदेखी करते हुए अक्सर सांकेतिक एवं पहचान संबंधी मसलों को ही प्राथमिकता देती रही हैं। इस उपेक्षा से निराशा का भाव उपजा है, जो चुनावों में कॉर्पोरेट फंडिंग की बढ़ती प्रमुखता के कारण और गहरा हुआ है। इससे यह धारणा और मजबूत हुई है कि राजनीतिक व्यवस्था का झुकाव व्यापक जनता की ओर नहीं बल्कि अमीर कुलीनों के हितों की रक्षा की ओर बढ़ा है। इसके अलावा, भारत के आर्थिक रूप से वंचित समूहों के लिए राजनीतिक रणनीति उनका वोट खींचने के लिए उन्हें नकदी भुगतान, जनकल्याण योजनाओं, और ठोस लाभों के वितरण पर केंद्रित रही है। इन लोकलुभावन उपायों से तात्कालिक चिंताएं तो दूर होती हैं, लेकिन ऐसा दीर्घकालिक समाधान नहीं मिलता जिससे मिडिल-क्लास को उसकी उम्मीद के मुताबिक, आर्थिक स्थिरता और वृद्धि हासिल हो।

ऐसा लगता है कि सरकार के राजनीतिक गणित में समृद्ध और वंचित तबकों के हित ही शामिल हैं, मिडिल-क्लास लगभग उपेक्षित है। बढ़ती राजनीतिक उपेक्षा ने मिडिल-क्लास में अलगाव की भावना भर दी है और उसके मन में उस राजनीतिक व्यवस्था में अपनी भूमिका को लेकर सवाल उठ रहे हैं जिसे उसके सरोकारों की परवाह नहीं। भारत जबकि विकास के रास्ते पर आगे बढ़ रहा है, ऐसे राजनीतिक संगठनों और पैरोकारों की ज़रूरत है जो खासतौर से इस तबके के सरोकारों को सुलझाएं और स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करें। मिडिल-क्लास में पनपते अलगाव को रोकने के लिए आर्थिक नीति, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, रोज़गार सुरक्षा और इन्फ्रास्ट्रक्चर जैसे मसलों को प्राथमिकता देना ज़रूरी है क्योंकि इस समूह में भारत को समृद्ध भविष्य की ओर ले जाने की क्षमता है। इन सरोकारों की उपेक्षा से न केवल देश की आर्थिक प्रगति की रफ्तार धीमी होगी बल्कि इस अहम तबके का मोहभंग भी होगा। एक संभव समाधान यह हो सकता है कि मिडिल-क्लास के लिए एक प्रेशर ग्रुप का गठन किया जाए। यह वैसा ही हो सकता है जैसे कि किसानों, अल्पसंख्यकों, दलितों, ओबीसी, और आदिवासी समुदायों की पैरवी के लिए गठित नेटवर्क हैं। राजनीतिक मोहभंग और कथित विश्वासघात के इतिहास के मद्देनज़र मिडिल-क्लास पारंपरिक राजनीतिक दलों से जुड़ने में हिचक सकता है। इस संदर्भ में, एक गैर-राजनीतिक संगठन मिडिल-क्लास के सरोकारों को स्पष्ट करने और उनके पक्ष में वातावरण बनाने के मंच का काम कर सकता है। समय बीतने के साथ यह मुहिम भरोसा, उम्मीद और विश्वास जगा सकती है, जिसके कारण एक ऐसी राजनीतिक शक्ति उभर सकती है जो इस वर्ग के हितों को आगे बढ़ाए और चुनावी नतीजों को प्रभावित करे। इस पहल से भारतीय राजनीति में एक बुनियादी बदलाव आएगा जो धर्म, जाति और भाषा के गहरे विभाजनों से आगे बढ़कर आकांक्षाओं और विकास पर केंद्रित राजनीति को आगे बढ़ाएगा। यह मुहिम मिडिल-क्लास की आवाज़ को बुलंद करते हुए जनसंख्या के मामले में भारत की बढ़त का लाभ उठाएगी और इस अहम तबके की ज़रूरतों को अंततः पूरा करेगी। ऐसे ही बदलाव के जरिए भारत अपने मिडिल-क्लास की समृद्धि को सुरक्षा प्रदान कर सकता है और उसे देश के आर्थिक विकास तथा सामाजिक एकता में सार्थक योगदान देने के लिए सक्षम बना सकता है।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद की बैठक में हुए विशेष निर्णय

2312 करोड़ रूपए से अधिक राशि के सड़क निर्माण कार्यों की स्वीकृति

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में बुधवार को मंत्रि-परिषद की बैठक मंत्रालय में हुई। मंत्रि-परिषद द्वारा विद्युत एवं नवीकरणीय ऊर्जा उपकरणों के विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए औद्योगिक क्षेत्र मोहासा- बाबई जिला नर्मदापुरम के क्षेत्रफल विस्तार करने की स्वीकृति दी गयी। निर्णय अनुसार विद्युत एवं नवीकरणीय ऊर्जा उपकरणों के विनिर्माण क्षेत्र के लिए आरक्षित 441.96 एकड़ क्षेत्रफल में औद्योगिक क्षेत्र मोहासा बाबई की 442.04 एकड़ भूमि को शामिल किया गया है। अब औद्योगिक पार्क का क्षेत्रफल कुल 884 एकड़ हो गया है। इसी प्रकार औद्योगिक पार्क के लिए स्वीकृत सुविधाएं एवं आवंटन प्रक्रिया को संशोधित क्षेत्रांतर्गत स्थापित होने वाली इकाइयों को भी उपलब्ध कराने का अनुमोदन किया गया।

- **विद्युत एवं नवीकरणीय ऊर्जा उपकरणों के विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए औद्योगिक क्षेत्र मोहासा- बाबई में 442.04 एकड़ भूमि शामिल करने की स्वीकृति**
- **उज्जैन-इंदौर के बीच बनेगा 48 किमी ग्रीन फील्ड फोरलेन**
- **सिंहस्थ बायपास फोरलेन को भी मंजूरी; 11-26 दिसंबर तक मनेगा जन कल्याण पर्व**

मंत्रि-परिषद द्वारा आगामी सिंहस्थ-2028 को देखते हुए इंदौर-उज्जैन में 2312 करोड़ रूपये से अधिक राशि के सड़क निर्माण कार्यों की स्वीकृति दी गयी। इसमे उज्जैन सिंहस्थ बायपास लंबाई 19.815 कि.मी., 4-लेन मय पेव्हड शोल्डर उन्नयन एवं निर्माण कार्य लागत राशि 701 करोड़ 86 लाख रूपये की स्वीकृति दी गई। इसी प्रकार इंदौर-उज्जैन ग्रीनफील्ड मार्ग 4-लेन मय पेव्हड शोल्डर लंबाई 48.05 कि.मी. एवं लागत राशि 1370 करोड़ 85 लाख रूपये और उज्जैन जिला अंतर्गत इंगोरिया-देपालपुर 2-लेन मय पेव्हड शोल्डर सड़क लंबाई 32.60 कि.मी. लागत राशि 239 करोड़ 38 लाख रूपये की स्वीकृति दी गयी है। ये सभी सड़कें म.प्र. सड़क विकास निगम के माध्यम से विकसित की जायेगी।

आबकारी नीति के निर्धारण के लिए मंत्रि-परिषद समिति का गठन

मंत्रि-परिषद ने वर्ष 2025-26 के लिए आबकारी नीति के निर्धारण, समय-समय पर आनुषांगिक निर्णय लेने और राजस्व हित मे आवश्यक नीतिगत निर्णय लेने के लिए मंत्रि-परिषद समिति का गठन किये जाने का अनुमोदन दिया। मंत्रि-परिषद् समिति मे उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा, मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह, श्री गोविंद सिंह राजपूत और सुश्री निर्मला भूरिया शामिल है।

स्वर्ण मंदिर के बाहर अकाली सुखबीर बादल पर चली गोली

- **बाल-बाल बचे अकाली दल के दिग्गज नेता, आरोपी गिरफ्तार**

अमृतसर (एजेंसी)। पंजाब के अमृतसर स्थित स्वर्ण मंदिर से एक बड़ी खबर सामने आई है, जहां शिरोमणि अकाली दल के नेता और पंजाब के पूर्व डिप्टी सीएम पर गोली चलाने की कोशिश की गई। उन पर हमले की यह कोशिश तब हुई जब वे स्वर्ण मंदिर के बाहर दरबान के तौर पर सेवाएं दे रहे थे। फायरिंग से पहले ही वहां खड़े अन्य सेवादारों ने हमलावर को पकड़ लिया और सुखबीर बादल पर हमले की कोशिश नाकाम हो गई। स्वर्ण मंदिर में सुखबीर बादल पर हमले की कोशिश

करने वाले आरोपी की पहचान नारायण सिंह के तौर पर हुई है, जो कि पहले भी कई आतंकी घटनाओं से जुड़े केसों में शामिल रहा था। अकाली दल के प्रमुख नेता पर हुए इस हमले को लेकर पार्टी के नेता डॉ.दलजीत सिंह चीमा से लेकर बिक्रम सिंह मजीठिया ने पंजाब की आप सरकार को निशाने पर लिया। उन्होंने एक पंजाबी न्यूज चैनल से बातचीत में यह भी कहा कि पंजाब में कानून व्यवस्था बेहद खराब हो चुकी है। सुखबीर बादल पर हमले की कोशिश करने वाले आरोपी को तुरंत की पकड़ लिया गया। वे इस हमले में बाल-बाल बचे हैं, क्योंकि गोली उन्हें न लगकर दीवार में जा लगी थी। बताया जा रहा है कि आरोपी खालिस्तान समर्थक रहा है, भी खालिस्तानी गतिविधियों में शामिल रह चुका है।

सुप्रभात

यह रेलगाड़ी जैसी है
लाई है मुझे
पिछले दूर के स्टेशन से
और छोड़कर जाएगी
किसी अनजान स्टेशन पर

जब मैं चला था सफ़र पर
तो सूरज उग रहा था
वसंत शुरू ही हुआ था
और बहुत से लोग साथ थे

अब पतझड़ की शाम ढल रही है
और डिब्बा खाली हो रहा है

ऐसी ही किसी साँझ
जब मैं उतरूँगा किसी
सुनसान स्टेशन पर
तब उबड़-खाबड़ बंजर ज़मीन
पर उगे बबूल के पेड़ों के पीछे
सूरज डूब रहा होगा
मेरे साथ
मेरी कहानी और मेरी दुनिया भी
उतर जाएगी चुपचाप

धुआँ छोड़ते इंजन के साथ रेल
चली जाएगी
चमकीली पटरी पर पर आगे।

- **चन्द्रशेखर साकल्ले**

राज्य शासन ने जारी किए दो आईपीएस के ट्रांसफर ऑर्डर

उपेंद्र कुमार जैन अब डीजी ईओडब्ल्यू,अजय शर्मा को एमपी पुलिस हाउसिंग का अध्यक्ष बनाया

भोपाल (नप्र)। कैलाश मकवाना के मप्र का नया पुलिस महानिदेशक बनते ही राज्य शासन ने डीजी पद के दावेदार रहे अफसरों के बुधवार को तबादला आदेश जारी कर दिए। इसमें 1989 बैच के आईपीएस और वर्तमान में डीजी ईओडब्ल्यू अजय कुमार शर्मा को मप्र पुलिस आवास और अधोसंरचना विकास निगम का अध्यक्ष बनाया गया है। इसी तरह 1991 बैच के आईपीएस एमपी पुलिस आवास और अधोसंरचना विकास निगम के प्रबंध संचालक उपेंद्र कुमार जैन (स्पेशल डीजी) को डीजी ईओडब्ल्यू के पद पर पदस्थ किया गया है।

अभी और आईपीएस के होंगे तबादले

प्रदेश के कई जिलों के पुलिस अधीक्षकों और अन्य आईपीएस अफसरों के भी तबादले जल्द होंगे। यह तबादले नवम्बर में ही होना थे। लेकिन नए डीजीपी के चयन के चलते तबादलों की कार्यवाही को रोक दिया गया था। सीएम डॉ मोहन यादव ने नए डीजीपी के चयन के बाद पुलिस अफसरों के तबादले पर सहमति दी थी। अब जबकि सीएम यादव विदेश दौरे से लौट आए हैं और नए डीजीपी कैलाश मकवाना ने चार्ज लेने के बाद कामकाज शुरू कर दिया है, तो जल्दी ही कुछ जिलों के एसपी, रेंज आईजी के साथ सीनियर आईपीएस अफसरों के ट्रांसफर आदेश जारी किए जाएंगे। मंत्रालय अफसरों के मुताबिक तबादला लिस्ट तैयार है, इसमें नए डीजीपी के साथ चर्चा के बाद बदलाव कर आदेश किए जाना है।

बांग्लादेश में अब हिंदुओं के सफाए की हो रही कोशिश

ब्रिटिश सांसद बोले-वहां घर जलाए,पुजारियों को जेल भेजा

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश में हिंदू समुदाय पर हो रहे हमले को लेकर ब्रिटिश सांसदों ने चिंता जताई है। न्यूज एजेंसी के मुताबिक विपक्षी कंजरवेटिव पार्टी के सांसद बॉब ब्लैकमैन ने कहा कि बांग्लादेश में शेख हसीना के सत्ता से बाहर होने के बाद हिंदुओं का सफाया (एथनिक क्लींजिग) करने की कोशिश हो रही है। ब्रिटिश संसद में एक बहस के दौरान ब्लैकमैन ने कहा कि बांग्लादेश में हिंदुओं के घर जला दिए गए हैं। उनके दुकानों और घरों में तोड़फोड़ की जा रही है। पुजारियों को गिरफ्तार किया जा रहा है। ब्लैकमैन ने कहा कि इस मामले पर कार्रवाई करने की जिम्मेदारी ब्रिटेन की है, क्योंकि उन्होंने ही बांग्लादेश को आजाद कराया था।

हिंदुओं पर अत्याचार, ऐक्शन ले सरकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदुओं पर अत्याचार और एक हिंदू पुजारी को गिरफ्तार करने का मुद्दा बुधवार को लोकसभा में गूंजा। कृष्ण नगरी मथुरा की सांसद हेमा मालिनी समेत भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के कुछ सदस्यों ने पड़ोसी देश में हिंदुओं की सुरक्षा के लिए केंद्र सरकार से हस्तक्षेप का अनुरोध किया और संसद से एक प्रस्ताव पारित करने की भी मांग की। शून्यकाल में इस विषय को उठाते हुए मथुरा से भाजपा सांसद हेमा मालिनी ने कहा कि बांग्लादेश में हिंदुओं पर और इस्कॉन संस्था एवं उसके अनुयायियों पर चरमपंथियों द्वारा किए जा रहे हमले निंदनीय हैं। उन्होंने हिंदू पुजारी चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी का उल्लेख करते हुए कहा कि इस्कॉन के लोग मानवता के लिए अच्छा काम कर रहे हैं।

आज के 'अभिमन्यु' देवेन्द्र फडणवीस ने तोड़ा चक्रव्यूह

बन गए महाराष्ट्र के अगले सीएम, तीसरी बार लेंगे शपथ

मुंबई (एजेंसी)। देवेंद्र फडणवीस महाराष्ट्र के अगले मुख्यमंत्री होंगे। फडणवीस ने शिवसेना नेता एकनाथ शिंदे, एनसीपी लीडर अजित पवार के साथ राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन के सामने सरकार बनाने का दावा पेश किया। इस दौरान भाजपा के ऑब्जर्वर्स विजय रूपाणी और निर्मला सीतारमण भी मौजूद थे। इससे पहले भाजपा विधायक दल की बैठक में देवेंद्र फडणवीस को नेता चुना गया। इसके बाद फडणवीस मुख्यमंत्री आवास वर्षा पहुंचे, यहां शिंदे और पवार के साथ बातचीत की। सूत्रों के मुताबिक यहां मंत्रियों के नामों पर चर्चा हुई। शपथ ग्रहण का कार्यक्रम कल 5.30 बजे आजाद मैदान में होगा। शिवसेना नेता ने फडणवीस के नाम के ऐलान के बाद कहा कि 2 डिप्टी सीएम भी कल ही शपथ लेंगे। दरअसल, चुनाव नतीजों के 11 दिन बाद आज मुंबई में हुई बीजेपी विधायक दल की बैठक में देवेंद्र फडणवीस के नाम पर सहमति बन गई है। सूत्र बताते हैं कि एकनाथ शिंदे और अजित पवार राज्य के डिप्टी सीएम की शपथ लेंगे। हालांकि अभी डिप्टी सीएम को लेकर आधिकारिक तौर पर कुछ भी ऐलान नहीं किया गया है। विधायक दल का नेता चुने जाने के बाद फडणवीस ने कहा कि मैं एकनाथ शिंदे और अजित पवार करा शुक्रिया अदा करता हूं।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 18 °c | न्यूनतम 13°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ गुरुवार, 05 दिसंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

अयोध्या में शुरू हो गई राम-जानकी विवाह की रस्में

● भव्य तरीके से विवाह पंचमी पर होगा यह शुभ विवाह

अयोध्या (एजेंसी)। प्रभु श्री राम की नगरी अयोध्या एक बार फिर भव्य तरीके से सजाई जा रही है और चारों ओर उत्सव का माहौल है। हो भी क्यों न आखिर प्रभु श्री राम सीता माता के साथ विवाह होने जा रहा है। अयोध्या की गली-गली में श्री राम के पग गाए जा रहे हैं।

पहली बार बाल स्वरूप में विराजमान श्री राम के विवाह की तैयारी की जा रही है। बता दें कि हर साल मार्गशीर्ष मास के कृष्ण

पक्ष की पंचमी तिथि को विवाह पंचमी का पर्व मनाया जाता है। इस दौरान माता सीता और श्री राम का विवाह किया जाता है। इस उपलक्ष्य में इस साल अयोध्या में भी भव्य आयोजन किया जा रहा है। इस मांगलिक कार्य का आरंभ गणेश पूजा के साथ हो चुका है। अयोध्या के प्रमुख मंदिरों में होने वाले राम-जानकी विवाह में शामिल होने के लिए दूर-दराज से श्रद्धालुओं की भारी भीड़ पहुंच रही है।

अयोध्या के जानकी महल ट्रस्ट ने भी राम विवाह के आयोजन की तैयारी बहुत बड़े पैमाने में गई है। यहां पर कार्यक्रम 3 दिसंबर को गणेश पूजा के साथ आरंभ हो चुके हैं, जो 8 दिसंबर 2024 तक चलेंगे। अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा के बाद पहली बार नेपाल के लिए बारात रवाना हुई थी, जो 3 दिसंबर को नेपाल पहुंच गई है।

12वीं बोर्ड का परीक्षा टाइम टेबल जारी

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में बोर्ड की तैयारी कर रहे छात्रों के लिए एक अच्छी खबर सामने आई है। बता दें कि माध्यमिक शिक्षा मंडल ने 12वीं का टाइम टेबल जारी कर दिया है। जारी हुए टाइम टेबल के मुताबिक 12वीं बोर्ड की परीक्षा 25 फरवरी से शुरू हो रही है। इसमें पहला पेपर हिंदी का होगा, वहीं आखिरी पेपर मैथ का होगा। इसके अलावा जानिए कब कौन सा पेपर होगा।

कब- कब होगा पेपर-

- 25 फरवरी 2025 - हिंदी
- 28 फरवरी 2025- अंग्रेजी
- 1 मार्च 2025- उर्दू, मराठी
- 4 मार्च 2025- भौतिक शास्त्र, अर्थशास्त्र, एनिमल हस्बैण्डरी मिल्क ट्रेड पोल्ट्रीफार्मिंग एण्ड फिशरीज, विज्ञान के तत्व, भारतीय कला का इतिहास
- 5 मार्च 2025- बायोटेक्नॉलोजी, गायन वादन, तबला पंखावज
- 6 मार्च 2025- ड्रॉइंग एंड डिजाइन
- 7 मार्च 2025- भूगोल, क्रॉप प्रोटेक्शन एंड हार्टिकार, स्टिल लाइफ एंड डिजाइन, शरीर रचना क्रिया विज्ञान एवं स्वास्थ्य
- 8 मार्च 2025- बायोलॉजी
- 10 मार्च 2025- मनोविज्ञान
- 11 मार्च 2025- इनफॉर्मेटिक प्रेक्टिसेस
- 12 मार्च 2025- संस्कृत
- 17 मार्च 2025- रसायन शास्त्र, इतिहास, व्यवसाय अध्ययन, एली ऑफ साइंस एंड मेथमेटिक्स यूजफुल फॉर एग्रीकल्चर
- 19 मार्च 2025- एनएसक्यूएफ , शारीरिक शिक्षा
- 20 मार्च 2025- समाज शास्त्र
- 22 मार्च 2025- कृषि, होम साइंस, बुक कीपिंग
- 24 मार्च 2025- राजनीति शास्त्र
- 25 मार्च 2025- गणित

संक्षिप्त समाचार

इजरायली स्टाइल में भारत भी कर सकेगा एयर स्ट्राइक

भारतीय सैन्य बेड़े में जल्द शामिल होने जा रहा नागास्त्र-1

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सेना अपनी ताकत को लगातार नई धार देती जा रही है। इसी कड़ी में इमरजेंसी प्रोक्योरमेंट के तहत जिस सुसाइड ड्रोन की खरीदारी हुई थी, अब उसे आधिकारिक तौर पर सेना में शामिल करने की तैयारी है। इसे नागास्त्र-1 के नाम से जाना जाता है जो दुश्मन के बंकर, चौकी और हथियार डिपो को एक झटके में खत्म कर सकता है। इस

तरह भारत भी अब इजरायल की स्टाइल में एयर स्ट्राइक करने में सक्षम होगा। नागास्त्र-1 को इकोनॉमिक्स एक्सप्लोसिव कंपनी की ओर तैयार किया गया है, जो नागपुर में स्थित है। सेना की ओर से नागास्त्र-1 का परीक्षण किया जा चुका है। चीन से लगती सीमा के पास लद्दाख की नुब्रा घाटी में इसे अंजाम दिया गया था। रक्षा एक्सपर्ट मानते हैं कि सुसाइड ड्रोन के आ जाने से भविष्य में सर्जिकल स्ट्राइक के लिए फाइटर जेट की जरूरत नहीं होगी। ये ड्रोन अपने आप में इतने सक्षम हैं कि दुश्मन के घर में चुपके से घुसकर हमला कर सकते हैं।

देश के दूसरे सर्वोच्च पद पर बैठे उपराष्ट्रपति ने शिवराज और भारत सरकार को दिखाया आईना : जीतू पटवारी

भोपाल। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री जीतू पटवारी ने आज पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुये कहा कि भारत के संविधान में दूसरे नंबर की सबसे बड़ी कुर्सी पर विराजित देश के उपराष्ट्रपति जी ने मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और देश के वर्तमान कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान के प्रति अपनी प्रतिक्रिया देते हुये यह कहा कि आप झूठ बोलते हो, यह प्रदेश और देश के लिए बड़ी गंभीर स्थिति है और उनकी इस प्रतिक्रिया ने जहां एक ओर देश की मोदी सरकार को आइना दिखाया है, वहीं प्रदेश में उनकी साख पर प्रश्नचिन्ह लगा है।

श्री पटवारी ने कहा कि यदि कोई झूठ बोलने वाला राजनैतिक व्यक्ति हैं तो वह है शिवराजसिंह चौहान। यदि गूगल करके देखो तो सबसे ज्यादा झूठ बोलने वाले व्यक्ति में शिवराज सिंह चौहान का नाम आता है। उन्होंने कहा कि मप्र में कांग्रेस पार्टी का अध्यक्ष बनने के बाद मैंने और कांग्रेस ने लगातार यह बात कही है कि शिवराज सिंह चौहान जनता से भी झूठ बोलते हैं, व्यवस्था से भी झूठ बोलते हैं। पिछले 12 मंगलवार बीते चुके हैं, मैंने उनसे समय मांगा और आप देश के कृषि मंत्री हैं, मैं भी कांग्रेस पार्टी का अध्यक्ष हूं। विपक्ष के नाते किसानों के हित में आपसे बात करना चाहता हूं, लेकिन उन्होंने मुझे कोई समय देना उचित नहीं समझा। यह मेरा व्यक्तिगत रूप से कोई अपमान नहीं है यह व्यवस्था का अपमान है। शिवराज सिंह चौहान में थोड़ी सी भी राजनैतिक मर्यादा बची हो तो देश के उपराष्ट्रपति ने आपके काम की तरीके पर सवाल क्यों उठाए हैं? और यह कहा है कि आप कर क्या रहे हो, इतने साल से किसान अपनी फसलों के दाम मांग रहे हैं, आप मौन हैं, किसानों के लिए आपने क्या प्रयास किया। तीन दिन पहले संसद में शिवराज सिंह चौहान ने संसद में कहा किसानों को लागत से दोगुना समर्थन मूल्य नरेंद्र मोदी की सरकार देती है।

श्री पटवारी ने कहा कि इसका साफ मतलब है या तो धनकड़ साहब की भावना गलत थी या शिवराज सिंह चौहान ने संसद के अंदर झूठ बोला, मैं धनगढ़ साहब को साधुवाद देता हूं, किसानों के हित और अधिकारों की बात कही मैं व्यक्तिगत रूप से उनसे मिलूंगा और आग्रह करूंगा कि इतनी हिम्मत से अपने सरकार को आइना दिखा नरेंद्र मोदी और शिवराज सिंह चौहान को आइना दिखाया। मैं आग्रह करूंगा कि यही बात संसद की आसंदी पर बैठकर करें और सरकार को आईना दिखायें। श्री पटवारी ने कहा कि शिवराज जी आपका झूठ और पाखंड सर चढ़कर बोल रहा है। एक साल पहले शिवराज ने कहा कि 3100 रुपए धान, 2700 गेहूं के दाम मिलना चाहिए।

अच्युतानंद मिश्र पत्रकारिता के अजातशत्रु हैं

नई दिल्ली। वरिष्ठ पत्रकार, संपादक और साहित्यकार अच्युतानंद मिश्र के जन्मदिन के अवसर पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आईजीएनसीए) में उनके व्यक्तित्व, कृतित्व और नेतृत्व पर केन्द्रित पुस्तक 'अच्युतानंद मिश्रः समावेशी शब्द साधक' का लोकार्पण किया गया। पुस्तक के संपादक डॉ. मनीषचंद्र शुक्ल हैं और इसका प्रकाशन प्रलेक प्रकाशन, मुंबई ने किया है। पुस्तक का लोकार्पण आईजीएनसीए के अध्यक्ष रामबहादुर राय, सदस्य सचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी, कलानिधि प्रभाग के अध्यक्ष व डीन (प्रशासन) प्रो. रमेश चंद्र गौड़, माधवराव सप्रे संग्रहालय, भोपाल के संस्थापक-संयोजक विजयदत्त श्रीधर, मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल के मंत्री संचालक कैलाशचंद्र पंत और प्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. चंद्रकला त्रिपाठी ने किया। इस अवसर पर अच्युतानंद की भी गरिमामय उपस्थिति रही। लोकर्पण में पुस्तक के संपादक डॉ. मनीषचंद्र शुक्ल और प्रकाशक जितेंद्र पात्रो भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम के दौरान अच्युतानंद मिश्र के सहयोगी रहे साहित्यकारों और पत्रकारों ने अपने संस्मरण साझा किए। सबके संस्मरण भिन्न-भिन्न थे, लेकिन सबके संस्मरण से यह बात समान रूप से उभरी कि अच्युतानंद जी वे परिवार के बड़े की तरह सबकी बहुत चिंता करते थे और अत्यंत समावेशी थे। कोई भी उनसे अपना दुख-सुख निःसंकोच कह सकता था। उनके अंदर ममत्व और अपनत्व का भाव अद्भुत था। हिन्दी के प्राध्यापक रहे प्रो. रामाश्रय रत्नेश कहा कि उनमें निर्णय लेने की गजब की क्षमता थी। उनका व्यक्तित्व चुंबकीय था। वरिष्ठ पत्रकार अरुण त्रिपाठी ने कहा कि अच्युतानंद जी पत्रकारिता के अजातशत्रु हैं।

ट्रिब्यून, चंडीगढ़ के संपादक राजकुमार सिंह, वरिष्ठ पत्रकार और पत्रकारिता के अध्यापक प्रो. गोविंद सिंह, माइक्रोसॉफ्ट के निदेशक बालेंदु शर्मा दाधीच, वरिष्ठ पत्रकार संत समीर, भारतीय जनसंचार संस्थान के प्रो. प्रमोद कुमार, वरिष्ठ साहित्यकार श्रीमती नीरजा माधव, श्री आचार्य कृपलानी मेमोरियल ट्रस्ट के अभय प्रताप, वरिष्ठ पत्रकार उमेश चतुर्वेदी, प्रसिद्ध साहित्यकार ज्योतिष जोशी ने अपने संस्मरण साझा किए। सबने उनके शतायु होने की कामना की। इस अवसर पर मिश्र जी ने सभी वक्ताओं के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि उनके प्रति जितने अच्छे-अच्छे विशेषणों का प्रयोग वक्ताओं ने किया, वह उनका प्रेम है। उन्होंने कहा, 'मैंने कोई नया काम नहीं किया है, कोई अनोखा काम नहीं किया है। मैं आप सब के बीच से ही हूं और आप सब मेरे बहुत प्रिय हैं।' उन्होंने बीते दौर के पत्रकारों और संपादकों से लेकर आज के दौर की पत्रकारिता पर भी बात की और कहा कि हर स्थिति में संपादकों को संघर्ष करना पड़ा है। उन्होंने कहा, 'भारतेंदु हरिश्चंद्र से लेकर पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी तक जिन लोगों ने उस दौर की पत्रकारिता की है, वो तो बहुत महान थे, लेकिन उसके बाद की जो पीढ़ी हुई, 1950 के बाद की... 1950 की जब मैं बात कर रहा हूं, तो उस समय पराड़कर जी भी जीवित थे, अज्ञेय जी जीवित थे, तमाम नई पीढ़ी के संपादक जीवित थे और उन लोगों ने कम संघर्ष नहीं किया है।'

उन्होंने आगे कहा, 'उन संपादकों को भी हम लोगों ने देखा है, ये हमारे सामने ही हुआ है, चाहे अज्ञेय जी रहे हों, या विद्यानिवास मिश्र जी रहे हों या मनोहर श्याम जोशी रहे हों, या स्वयं प्रभाष जोशी रहे हों, किन-किन ढंग से उनके प्रबंधन ने उनको अपमानित किया, किन परिस्थितियों में रखा, तो ये सारी तस्वीरें हमारे सामने हैं।'

पुस्तक के बारे में

पुस्तक के बारे में बताते हुए, प्रसिद्ध पत्रकार एवं राज्यभा के उपसभापति श्री हरिवंश ने इसके फ्लैप पर लिखा है- यह पुस्तक सुप्रसिद्ध पत्रकार, लेखक और संपादक अच्युतानंद मिश्र के व्यक्तित्व, कृतित्व और नेतृत्व पर केंद्रित है। यह पुस्तक बताती है कि मिश्र जी ने 'नवभारत टाइम्स', 'जनसत्ता', 'अमर उजाला' और 'लोकमत समाचार' जैसे प्रतिष्ठित समाचार पत्रों में श्रेष्ठ संपादक के दायित्वबोध का निर्वहन कैसे किया, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलपति के रूप में अपने नवाचार व नवीन प्रयोगों से स्वाधीन भारत की हिंदी पत्रकारिता के इतिहास लेखन का संरक्षण कैसे किया और नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट के लंबे समय तक महामंत्री एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में कौन-कौन से उल्लेखनीय कार्य किए? इस पुस्तक के पहले खंड में मिश्र जी के रचनात्मक अवदान का मूल्यांकन है। उसमें उनकी मौलिक पुस्तकों 'सरोकारों के दायरे', 'तीन श्रेष्ठ कवियों का हिंदी पत्रकारिता में अवदान', 'कुछ सपने, कुछ संस्मरण' और संपादित पुस्तकों- 'हिंदी के प्रमुख समाचारपत्र और पत्रिकाएं' (चार खंड) तथा 'पत्रों में समय संस्कृति' की समालोचनाएं हैं। दूसरा खंड मिश्र जी के बहुआयामी व्यक्तित्व पर केंद्रित है। तीसरा खंड जनसत्ता परिवार है, जिसमें मिश्र जी के सहयोगी रहे पत्रकारों ने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को समेकित रूप में प्रस्तुत किया है। चौथे खंड में अच्युतानंद मिश्र की चयनित रचनाएं हैं। पांचवां खंड संवाद का है, जिसमें अच्युतानंद मिश्र से कई विद्वानों की बातचीत को शामिल किया गया है।

संभल नहीं जा सके राहुल-प्रियंका

गाजीपुर बॉर्डर से लौटे

दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेस-वे पर 4 घंटे जाम से लोग परेशान, कांग्रेस कार्यकर्ताओं को पीटा

नई दिल्ली/संभल (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी और प्रियंका गांधी बुधवार को उत्तर प्रदेश के संभल नहीं जा सके। यहां उन्हें हिंसा में मारे गए लोगों के परिजन से मिलना था। यूपी पुलिस ने उनके काफिले को गाजीपुर बॉर्डर पर रोक लिया। इससे दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेस-वे पर 4 घंटे तक 5 किमी लंबा जाम लगा रहा। हालांकि, राहुल-प्रियंका यहां 3 घंटे ही रुके थे। जाम की वजह से ट्रैफिक में फंसे लोग नाराज हो गए। उनकी कांग्रेस कार्यकर्ताओं से झड़प हुई। लोगों ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं को पीट दिया।

इससे पहले राहुल ने भी अफसरों से बातचीत की। कहा- मैं पुलिस की गाड़ी में अकेले जाने को तैयार हूं लेकिन अफसर राजी नहीं हुए। राहुल हाथ में संविधान लेकर कार पर चढ़ गए। मीडिया को संबोधित किया। इसके बाद राहुल-प्रियंका दिल्ली लौट गए। उन्होंने कहा- अब 6 दिसंबर को संभल जाएंगे। संभल में कोर्ट के आदेश पर 24 नवंबर को जामा मस्जिद का सर्वे किया जा रहा था। इस दौरान हिंसा भड़क गई थी, जिसमें गोली लगने से चार युवकों की मौत हो गई थी।

प्रमोद भार्गव को मिलेगा नरेश मेहता स्मृति वांग्मय सम्मान

भोपाल। मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति हिंदी भवन भोपाल द्वारा दिए जाने वाले वार्षिक सम्मानों की घोषणा समिति के संचालक कैलाशचंद पंत ने की है।इस बार का समिति का सबसे प्रमुख अखिल भारतीय सम्मान शिवपुरी के साहित्यकार एवं पत्रकार प्रमोद भार्गव को उनकी पुस्तक 'पुरातन विज्ञान' पर दिया जाएगा।सम्मान के अंतर्गत 51 हजार की राशि, प्रशस्ति पत्र, शॉल,श्रीफल भेंट किए जाएंगे। इसी तरह वीरेंद्र कुमार तिवारी सम्मान बैतूल के शिशिर कुमार चौधरी,शैलेश मटियानी कथा सम्मान भोपाल की श्रीमती शीला मिश्रा, सुरेशचंद्र

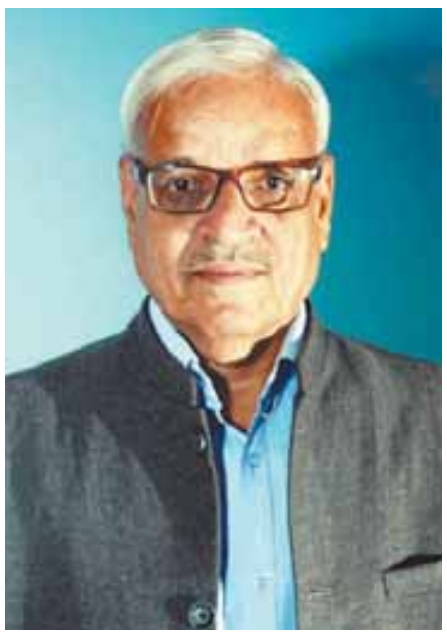

शुक्ल नाट्य सम्मान मुम्बई के जयंत शंकर देशमुख, डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय आलोचना सम्मान कोच्चि की डॉ के वनजा, शंकरलाल बत्ता पौराणिक सम्मान भोपाल के मोहन तिवारी आनंद,संतोष श्रीवास्तव कथा सम्मान हल्द्वानी को दिया जाएगा। इन सम्मानों के अंतर्गत 21 हजार की राशि, प्रशस्ति पत्र, शॉल, श्रीफल प्रदान किए जाएंगे। श्रीमती संतोष बत्ता स्मृति सम्मान भोपाल की श्रीमती इंदिरा दांगी को दिया जाएगा। इसमें 11 हजार की राशि के साथ प्रशस्ति पत्र, शॉल, श्रीफल दिए जाएंगे।

नदियों के साथ नल भी जमे, सख्त हुए ठंड के तेवर

हिमाचल में हाल बेहाल, राजस्थान में 3 डिग्री तक गिरा पारा

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईएमडी के अनुसार, अगले तीन-चार दिनों तक राजस्थान के अलावा उत्तर भारत के कई राज्यों में रात के तापमान में गिरावट आएगी। इससे कड़ाके की ठंड पड़ सकती है। पहाड़ों से आ रही हवाओं ने भी उत्तर भारतीय राज्यों में ठिठुरन बढ़ा दी है। राजस्थान के सीकर में मंगलवार को न्यूनतम तापमान 9 डिग्री दर्ज हुआ। राज्य के ही करौली, बारां, चूरू, चित्तौड़गढ़ में न्यूनतम तापमान 10 डिग्री रहा। अगले कुछ दिनों में राज्य के अधिकतर हिस्सों का तापमान 2 से 3 डिग्री तक गिरने की संभावना है। हिमाचल प्रदेश में कुल्लू और लाहौल स्पीति की ऊंची चोटियों पर मंगलवार को भी रुक-रुक कर बर्फबारी का दौर जारी रहा। इस कारण राज्य के कल्पा में न्यूनतम तापमान -1 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। तापमान गिरने से झरनों, नदी-नालों के साथ अब नल भी जमने लगे हैं। बीते दिन शिमला सहित कई अन्य इलाकों में मौसम साफ रहा। इससे अधिकतम तापमान में कुछ बढ़ोतरी भी दर्ज हुई। मौसम विभाग ने बुधवार से 7 दिसंबर तक प्रदेश में सभी जगह मौसम के साफ रहने का पूर्वानुमान जारी किया है। हालांकि, प्रदेश के मैदानी इलाकों में कोहरा रहेगा। विभाग ने 8 व 9 दिसंबर को लाहौल-स्पीति, कुल्लू, चंबा, किन्नौर, मंडी व कांगड़ा जिले के ऊंचाई वाले इलाकों में बारिश-बर्फबारी का अनुमान जताया है। वहीं, पंजाब में अगले 6 दिनों तक मौसम ड्राई रहने का अनुमान है। मध्यप्रदेश में मंगलवार को छिंदवाड़ा, सिवनी, बैतूल, मालवा-निमाड़, बुंदेलखंड में बादल छाए रहे।

मौसम विभाग अनुसार अगले दो दिन तक बादल छाए रहने का अनुमान है, लेकिन बारिश के आसार नहीं हैं। बादलों की वजह से रात का टेम्परेचर भी 6 डिग्री तक बढ़ गया है। यूपी में सोमवार रात को मेरठ सबसे ठंडा शहर रहा। यहां का न्यूनतम तापमान 10.0 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। मौसम वैज्ञानिक डॉ. शाही ने बताया कि मंगलवार को मौसम में फिर बदलाव हुआ। रात के तापमान में गिरावट आई, जबकि दिन का तापमान बढ़ गया। वेस्ट यूपी के शहरों की हवा में दो दिन में सुधार आया है। मेरठ, गाजियाबाद, नोएडा, बुलंदशहर, मुजफ्फरनगर में एक्यूआई रेड जोन से नीचे आया है। राजस्थान में 5 दिसंबर से सर्दी के तेवर तेज हो सकते हैं। राज्य के अधिकांश हिस्सों में तापमान 2 से 3 डिग्री तक गिरने की संभावना है। इसके साथ ही उत्तर-पूर्वी राजस्थान के शहरों में सुबह-शाम सर्द हवाएं चल सकती हैं। पिछले 24 घंटे में राज्य में सभी जगह आसमान साफ रहा। मध्यप्रदेश में इस समय दो तरह का मौसम है। फेंगल तूफान से प्रदेश में बादल छाए हुए हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने क्रांतिसूर्य जननायक टंट्या मामा के बलिदान दिवस पर मुख्यमंत्री निवास में पुष्पांजलि अर्पित की।

राज्यपाल पटेल ने क्रांतिसूर्य टंट्या भील का किया पुण्य स्मरण

- राजभवन में बलिदान दिवस पर मौन रखकर दी गई श्रद्धांजलि

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने स्वतंत्रता संग्राम के जनजातीय नायक क्रांतिसूर्य टंट्या भील के बलिदान दिवस पर आज उनका पुण्य स्मरण किया। उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। राज्यपाल श्री पटेल ने राजभवन के अधिकारी-कर्मचारियों के साथ दो मिनट का मौन रखकर जनजातीय नायक को श्रद्धांजलि दी। राजभवन के बेंक्वेट हॉल में आयोजित बलिदान दिवस कार्यक्रम में राज्यपाल के विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी श्री अरविंद पुरोहित, डॉ बी.के. श्रीवास्तव, नियंत्रक श्रीमती शिल्पी दिवाकर, लाइब्रेरियन श्री अमित दीक्षितऔर अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

बांग्लादेश के हिन्दुओं पर होने वाली ज्यादतियों की भर्त्सना : हरदेनिया

भोपाल (नप्र)। राष्ट्रीय सेक्युलर मंच समेत भोपाल की अनेक धर्मनिरपेक्ष सेक्युलर संस्थाएँ बांग्लादेश में हिन्दुओं के ऊपर लगातार होने वाली ज्यादतियों की भर्त्सना करती है। आज जारी एक संयुक्त वक्तव्य में सेक्युलर मंच के संयोजक एल.एस. हरदेनिया एवं प्रगतिशील लेखक संघ के शैलेन्द्र शैली ने इस बात पर अफसोस जाहिर किया है कि बांग्लादेश अपना सेक्युलर चरित्र लगातार खोते जा रहा है। हमें अभी तक इस बात पर गर्व था कि बांग्लादेश एक पूरी तरह सेक्युलर राष्ट्र है। वक्तव्य में भारत सरकार के साथ दुनिया की तमाम राष्ट्रों से अपील की है कि वे बांग्लादेश की सरकार पर दबाव बनाए ताकि वहां के साम्प्रदायिक तत्वों पर नियंत्रण पाया जा सके। वक्तव्य में इस बात पर भी जोर दिया गया है कि हम अपने देश में भी अल्पसंख्यकों की सुरक्षा और विकास पूरी तरह सुनिश्चित करें। इसके साथ ही देश की तमाम सेक्युलर पार्टियों और संस्थाओं से अपील है कि किसी भी ऐसी घटना को बढ़ावा न दें जिससे हमारे देश के अल्पसंख्यक अपने को असुरक्षित महसूस करें।

भोपाल में पत्नी-साली की हत्या करने वाले एएसआई का खुलासा

- एक और एसआई की हत्या के बाद सुसाइड करने का था प्लान

भोपाल (नप्र)। भोपाल के सुभाष नगर स्थित फ्लैट में पत्नी विनीता और साली मेघा की चाकू से गोदकर हत्या करने वाले एएसआई योगेश मरावी ने पुलिस की पूछताछ में बड़े खुलासे किए हैं। आरोपी ने पुलिस को बताया कि फरारी के दौरान ग्वालियर में पदस्थ एक एसआई की हत्या करने की प्लानिंग थी। उसे संदेह था कि पत्नी और इस एसआई के बीच अवैध संबंध हैं। एसआई की हत्या करने के बाद सुसाइड करने का प्लान था। लेकिन इससे पहले ही पुलिस गिरफ्त में आ गया। पुलिस को उसकी जेब से एक सुसाइड नोट भी मिला है। जिसमें उसने पत्नी के अवैध संबंध, साली द्वारा पत्नी को भड़काने तथा पति-पत्नी के बीच सुलह न होने देने का जिक्र किया है। पुलिस आरोपी से पूछताछ में जुटी है। पुलिस कमिश्नर हरीनारायणचारी मिश्रा ने बताया कि आरोपी को घटना के बाद तत्काल चिह्नित कर लिया गया था। भागने के लिए उसके द्वारा इस्तेमाल किए रास्तों का रोड मैप तैयार किया और हत्याकांड के महज चार घंटे के भीतर ही उसे गिरफ्तार कर लिया गया। उसकी जेब से सुसाइड नोट मिला है। उसके बयानों की तस्दीक की जा रही है। मामले की सभी पहलुओं पर जांच की जा रही है।

दीक्षांत, शिक्षा और संस्कारों के साथ राष्ट्र सेवा के संकल्प का प्रसंग : राज्यपाल पटेल

राज्यपाल आई.ई.एस. यूनीवर्सिटी के दीक्षांत समारोह में हुए शामिल

युवा, विकसित भारत यंग लीडर्स संवाद में उत्साहपूर्वक भाग लें

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि दीक्षांत, विद्यार्थियों के लिए शिक्षा और संस्कारों के साथ राष्ट्र सेवा के संकल्प का प्रसंग है। अपनी बौद्धिक, सांस्कृतिक परम्पराओं और संस्कारों को पोषित और पल्लवित करने की प्रतिबद्धता का अवसर है। राज्यपाल श्री पटेल आई.ई.एस. विश्वविद्यालय भोपाल के प्रथम दीक्षांत समारोह को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर दीक्षित विद्यार्थियों और विभिन्न संकायों के विद्यार्थियों को उपाधि और पदक प्रदान किए। कार्यक्रम में उच्च शिक्षा मंत्री श्री इंदर सिंह परमार भी मौजूद थे। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि प्रथम दीक्षांत समारोह, विद्यार्थी और विश्वविद्यालय दोनों के लिए अत्यंत भावनात्मक और अविस्मरणीय पल होता है। नये भविष्य के निर्माण पथ पर आगे बढ़ने का महत्वपूर्ण पड़ाव होता है। उन्होंने दीक्षित विद्यार्थियों से कहा कि आप सभी विकसित भारत के अमृत प्रसंग की प्रतिनिधि पीढ़ी है। आपकी पीढ़ी सौभाग्यशाली है जिन्हें प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में योगदान का ऐतिहासिक अवसर मिला है।

विकसित भारत यंग लीडर्स संवाद में जरूर हिस्सा लें युवा

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि युवा, कैसा विकसित भारत देखना चाहते है, उसके लिए सरकार को क्या और कैसे करना चाहिए, इन पर अपने विचार सरकार के शीर्ष स्तर तक पहुँचा सकते है। उन्होंने विद्यार्थियों से अपील की कि 12 जनवरी 2025 के ऐतिहासिक प्रसंग के अवसर पर विकसित भारत यंग लीडर्स संवाद का हिस्सा जरूर बने। विकसित भारत से संबंधित रोचक ऑनलाइन क्विज प्रतियोगिता, ब्लॉक और निबंध लेखन की राज्य और राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग ले। राज्यपाल श्री पटेल ने विश्वविद्यालय प्रबंधन से भी कहा कि संवाद में शामिल होने के लिए छात्र-छात्राओं को प्रेरित करें। उन्हें आवश्यक सुविधाएं, सहूलियत और सहयोग प्रदान करे। विश्वविद्यालय स्तर पर विकसित भारत यंग लीडर्स संवाद के प्रारूप अनुसार प्रतियोगिताएं आयोजित करे।

उच्च शिक्षा मंत्री श्री परमार ने कहा कि भारत की ज्ञान परम्परा वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित है। विद्यार्थी भारत की समृद्ध ज्ञान परम्परा से जुड़े, सतत अध्ययन करे, अपने स्तर पर आगे बढ़ाने सहभागिता करे और इस पर हमेशा गर्व करें। उन्होंने विश्वविद्यालय और दीक्षित विद्यार्थियों को प्रथम दीक्षांत समारोह की बधाई भी दी। कार्यक्रम में राज्यसभा सांसद श्रीमती सुधा मूर्ति ने भी दीक्षित विद्यार्थियों को जीवन में सफल होने, चुनौतियों से जुझने और आत्म मंथन प्रक्रिया पर ज्ञानवर्धक और प्रेरक उद्बोधन दिया।

राज्यपाल श्री पटेल ने समारोह का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन कर किया। उनका कुलाधिपति श्री बी.एस. यादव ने शॉल, श्रीफल और स्मृति चिन्ह भेंट कर अभिनंदन किया। राज्यपाल श्री पटेल ने दीक्षांत समारोह में राज्यसभा सांसद श्रीमती सुधा मूर्ति, समाजसेवी पद्मश्री अशोक भगत और कारगिल युद्ध के परमवीर चक्र विजेता सूबेदार मेजर श्री योगेन्द्र सिंह यादव को मानद उपाधि प्रदान की। स्वागत उद्बोधन कुलाधिपति श्री यादव ने दिया। कुलपति श्री जी.के. पाण्डेय ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। आभार श्री देवांश यादव ने माना। कार्यक्रम में श्री सुदेश शांडिल्य जी महाराज, विश्वविद्यालय के विभिन्न संकाय अध्यक्ष और विद्यार्थीगण उपस्थित रहे।

क्रांतिसूर्य टंट्या भील का 135वां बलिदान दिवस मनाया गया

- जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. शाह ने बड़ोदा अहीर गांव पहुंचकर श्रद्धासुमन अर्पित किए

भोपाल (नप्र)। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान योद्धा और जनजातीय समुदाय के महानायक क्रांतिसूर्य टंट्या भील जी के 135वें बलिदान दिवस के अवसर पर बुधवार को खंडवा जिले के पंधाना विधानसभा क्षेत्र के ग्राम बड़ोदा अहीर में श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। जनजातीय कार्य, लोक परिसंपत्ति प्रबंधन तथा भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुनर्वास मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह कार्यक्रम में शामिल हुए और टंट्या मामा का पुण्य स्मरण कर उनकी आदमकद प्रतिमा पर श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस अवसर पर पंधाना की विधायिका श्रीमती छाया मोरे, जिला पंचायत खंडवा के उपाध्यक्ष श्री दिव्यादित्य शाह, पंधाना की जनपद पंचायत अध्यक्षा श्रीमती सुन्नी बाई सहित ग्राम सरपंच एवं अन्य स्थानीय जन-प्रतिनिधि भी मौजूद रहे। श्रद्धांजलि कार्यक्रम में स्कूली छात्राओं द्वारा टंट्या मामा की याद में सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गई। बच्चों और बड़ों सभी ने 'टंट्या मामा अमर रहे' के नारे लगाये।

जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. शाह ने टंट्या मामा के जीवन और उनके योगदान को याद करते हुए कहा, टंट्या मामा ने ब्रिटिश शासन के अत्याचारों के खिलाफ जनजातीय समुदाय को संगठित कर आवाज उठाई। उन्होंने गुरिल्ला युद्धकला का सहारा लिया और गरीबों की मदद के लिए अमीरों से अतिरिक्त धन लेकर गरीबों, वंचितों और जरूरतमंदों का आर्थिक सहयोग किया। उनके इन्हीं कार्यों ने उन्हें जनजातीय समुदाय का महानायक बना दिया। टंट्या मामा को देश में 'इंडियन रॉबिनहुड' के नाम से भी जाना जाता है। उनका जन्म 26 जनवरी 1842 को खंडवा जिले के पंधाना ब्लॉक के ग्राम बड़ोदा अहीर में हुआ था। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियों का सक्रिय होकर विरोध किया। विरोधी गतिविधियों में मुखर होने के कारण ब्रिटिश शासन ने 4 दिसंबर 1889 को उन्हें गिरफ्तार कर जबलपुर में फांसी दे दी थी। इसीलिये हर वर्ष 4 दिसंबर को टंट्या मामा का बलिदान दिवस मनाया जाता है।

पीडब्ल्यूडी के कामों में नई तकनीकी पर वर्कशॉप

- युवा इंजीनियर्स की कैपिसिटी डेवलपमेंट, विकास परियोजनाओं को प्रभावी बनाने पर फोकस

भोपाल (नप्र)। लोक निर्माण विभाग में नई तकनीकी लागू करने के लिए बुलाई गई कार्यशाला का शुभारंभ मंत्री राकेश सिंह ने किया। इस मौके पर एसीएस पीडब्ल्यूडी केसी गुप्ता, एमडी एमपीआरडीसी अविनाश लवानिया, एमडी बीडीसी पंकज जैन मौजूद रहे। लोक निर्माण विभाग के विभागीय कार्यों में नई तकनीकी को शामिल करने और विकास परियोजनाओं को अधिक प्रभावी बनाने के लिए प्रशासन अकादमी में आज कार्यशाला के माध्यम से मंथन हो रहा है। लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह ने निर्माण क्षेत्र में नवीन तकनीक पर आधारित कार्यशाला का शुभारंभ किया। कार्यशाला में विभाग के अपर मुख्य सचिव केसी गुप्ता सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी और युवा इंजीनियर शामिल हुए हैं। इस वर्कशॉप में 19 और 20 अक्टूबर को भोपाल में आयोजित इंडियन रोड कांग्रेस (आईआरसी) के सेमिनार और रायपुर में हुए वार्षिक अधिवेशन में हुई चर्चाओं को साझा किया जाएगा। इनसे विभागीय कार्यों में तकनीकी प्रगति के महत्व और इसके उपयोग पर विचार-विमर्श किया जाएगा। भवन विकास निगम और लोक निर्माण विभाग के भारतीय प्रबंध संस्थान (आईआईएम) इंदौर से विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले 26 युवा इंजीनियर कार्यशाला में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे। इन रिपोर्ट्स में प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त ज्ञान और उसे व्यावहारिक रूप से लागू करने के तरीकों पर विस्तार से चर्चा होगी।

भोपाल में युवक का अपहरण, एक लाख की फिरौती मांगी

बहन को कॉल कर बोले आरोपी- भाई जिंदा चाहिए तो खामोशी से रकम भेज दो

भोपाल (नप्र)। भोपाल के छोला मंदिर इलाके में किराए का कमरा लेकर रहने वाले ऑटो चालक के अपहरण का मामला सामने आया है। सोमवार को उसके दोस्त ने मिलने के बहाने उसे एमपी नगर बुलाया था। इसके बाद से ही युवक लापता हो गया था। मंगलवार सुबह करीब 8:30 बजे युवक की बहन को अवधेश नाम के युवक का कॉल आया। उसने बहन से कहा कि आपका भाई मेरे कब्जे में है। एक लाख रुपए दे दो, नहीं तो इसकी हत्या कर देंगे। इसके बाद दोपहर करीब 3 बजे एक अन्य कॉल आया। इस कॉल करने वाले ने भी रकम की मांग। जिसके बाद युवती ने थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। देर रात पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर मामले की जांच शुरू की। कॉल करने वाले दोनों नंबरों की लोकेशन अलग-अलग जिलों में मिली है। टीआई सुरेशचंद्र नागर ने बताया कि, संदीप प्रजापती पुत्र सूरज प्रजापती (22) मूल रूप से विदिशा का रहने वाला है। फिलहाल परिवार के साथ छोला मंदिर इलाके में रह रहा है। सोमवार को उसके दोस्त अवधेश ने मिलने के लिए एमपी नगर बुलाया था। इसके बाद से ही वह लापता हो गया था। मंगलवार की सुबह 8:30 बजे उसकी बहन वंदना के नंबर पर कॉल आया। कॉल करने वाले ने स्वयं को अवधेश बताया। एक लाख रुपए की मांग की। संदीप को अपने कब्जे में बताया, रकम नहीं देने की हालत में भाई की हत्या की धमकी दी गई। दोपहर के समय उसके मोबाइल पर दोबारा कॉल आया, इस बार दूसरे नंबर से कॉल किया गया था। फिर वही धमकी दी गई। शाम को परिजन थाने आए, उनकी सुनवाई करते हुए एफआईआर दर्ज की गई। जिन नंबरों से कॉल किए गए, एक की लोकेशन नागपुर दूसरे की मुरैना में ट्रेस की गई है।

प्रदेश सरकार का संकल्प दिव्यांगता को दिव्यता में बदलना है : मंत्री कुशवाह

वैश्विक समाज के निर्माण में इस वर्ग की महत्वपूर्ण भागीदारी

भोपाल (नप्र)। सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन कल्याण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह ने कहा है कि समावेशी और उज्ज्वल भविष्य के लिए दिव्यांगों के नेतृत्व को बढ़ावा देना के लिए मध्यप्रदेश सरकार का प्रयास 'दिव्यांगता को दिव्यता के रूप में परिवर्तित' करने का है। इसके लिए राज्य सरकार, केन्द्र सरकार के साथ मिलकर कार्य कर रही है और दिव्यांगों के कल्याण के लिए उनको साधन के साथ अवसर भी मुहैया कराया जा रहा है। मंत्री श्री कुशवाह ने यह बात सामाजिक न्याय संचालनालय के ऑडिटोरियम में आयोजित राज्य स्तरीय दिव्यांगजन कल्याण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कही। कार्यक्रम की अध्यक्षता परशुराम बोर्ड के अध्यक्ष श्री विष्णु राजोरिया ने की। मंत्री श्री कुशवाह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश में दिव्यांगजनों को विकास की मुख्य धारा से जोड़ने का जो लक्ष्य निर्धारित किया है, उसके लिए मध्यप्रदेश में बाधा रहित वातावरण निर्माण का कार्य प्राथमिकता से किया जा रहा है। उन्होंने कहा वैश्विक समाज में वर्ग की भागीदारी उसमें होना चाहिए। उन्होंने दिवयांगजन के लिए सेवा और परमार्थ कार्य में लगी संस्थाओं को बधाई दी। उन्होंने दिव्यांगजनों से आहवान किया कि दिव्यांगता सफलता में बाधक नहीं है। आवश्यकता है दिव्यांगता को भी अवसर मानते हुए कड़े परिश्रम के साथ अपने लक्ष्य प्राप्त करने की। मंत्री श्री कुशवाह ने कार्यक्रम में दिव्यांग बच्चों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम की सराहना की और मूकबधिर बच्चों के बैंड में भाग लेने वाले सभी बच्चों को अपनी स्वेच्छानुदान निधि से प्रत्येक बच्चे को 2500 रूपये देने की घोषणा भी की।

राइस मिलर्स ने आपूर्ति निगम के एमडी को सौंपी चाबियां

धान खरीदी के लिए नहीं देंगे वारदाना, सरकार से एक हजार करोड़ का पेमेंट अटकने से हैं नाराज

भोपाल (नप्र)। 2 दिसंबर से एमपी में धान खरीदी शुरू होते ही प्रदेश भर के धान मिलर्स हड़ताल कर रहे हैं। धान मिलर्स एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष अशोक अग्रवाल का कहना है कि धान मिलिंग करने के बाद स्रष्टट्ठ और नागरिक आपूर्ति निगम में चावल जमा किए जाने के एवज में अपग्रेडेशन राशि दी जाती है। लेकिन, पिछले साल की राशि अब तक नहीं मिली है। हम लोग मंत्री से लेकर अधिकारियों तक यह परेशानी बता चुके हैं। अब हम अपनी-अपनी मिलों की चाबी लेकर भोपाल आए हैं। आज भोपाल में राइस मिलर्स नागरिक आपूर्ति निगम के दफ्तर पहुंचे और निगम के एमडी पीएन यादव को अपनी मिलों की चाबियां सौंपी। इस दौरान मिल मालिकों ने नारेबाजी भी की। राइस मिलर्स सीएम से मिलने पर अड़े हुए हैं। बता दें, मंगलवार को भोपाल के गुजराती समाज भवन में प्रदेश भर के धान मिलर्स ने बैठक कर रैली निकाली।

800 करोड़ रुपए शासन से मिलर्स को नहीं मिला: मध्यप्रदेश चावल उद्योग महासंघ के अध्यक्ष आशीष अग्रवाल ने बताया कि धान की मिलिंग में होने वाले नुकसान की भरपाई के लिए जब तक राज्य सरकार आश्वासन नहीं देती है, तब तक कोई भी मिलर्स मध्यप्रदेश में खरीदी जाने वाली धान की मिलिंग नहीं करेगा। हमने पिछले दो साल में जो धान मिलिंग का काम किया है, उसका कुल मिलाकर करीब 1 हजार करोड़ रुपए शासन से मिलर्स को नहीं मिला है। अग्रवाल कहना है कि दो दिसंबर से प्रदेश में धान का उपार्जन शुरू हो गया है। राज्य सरकार चाहती है कि पंद्रह जून तक कस्टम मिलिंग का काम पूरा कर अधिक से अधिक धान समितियों से सीधे मिलर्स को मिलिंग के लिए दे दी जाएं, लेकिन मिलर्स की समस्याओं के निराकरण के बिना धान की कस्टम मिलिंग चालू हो पाना संभव नहीं है।

मिलर्स बैंक डिफॉल्टर, मिल बंद करने की नौबत: आशीष अग्रवाल ने बताया कि भारतीय खाद्य मंत्रालय की टीम ने अधिकारियों की देखरेख में टेस्ट मिलिंग करवाई थी। इसमें यह सामने आया था कि धान मिलिंग से प्राप्त चावल की झड़ती 67 प्रतिशत से कम आती है।

आरिफ मसूद बोले-शरीयत को बचाने एकजुट हों पार्टियां

बीजेपी ने कहा-कांग्रेस धर्मनिरपेक्ष नहीं, इस्लामिक राष्ट्र बनाना चाहती है

भोपाल (नप्र)। कांग्रेस विधायक आरिफ मसूद का एक वीडियो सामने आने के बाद बीजेपी हमलावर हो गई है। वीडियो में मसूद कह रहे हैं कि शरीयत को बचाने के लिए तमाम राजनैतिक दलों को एक होना चाहिए। कांग्रेस विधायक के बयान पर भाजपा के प्रदेश मीडिया प्रभारी आशीष अग्रवाल ने पलटवार किया हैं। ये वीडियो कब और कहा का है, फिलहाल इसकी पुष्टि नहीं हो सकी है। वीडियो में मसूद ने क्या कहा-मैं मप्र असेंबली का मेंबर हूं, मैं उन लीडर से मुखातिब हूं जो ये सोच रहे हैं कि अपनी पार्टी के अंदर अपने नेता के खिलाफ कैसे जाएंगे? तो मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि, आप नेता के खिलाफ नहीं जाना चाहते तो क्या शरीयत के खिलाफ जाना चाहते हैं? आपको फैसला लेना होगा। आरिफ मसूद के इस वीडियो पर बीजेपी हमलावर हो गई हैं।

संपादकीय

सुखबीर पर हमला चिंताजनक

सिखों की सर्वोच्च संस्था अकाल तख्त के आदेश पर धार्मिक सजा भोग रहे शिरोमणि अकाली दल के प्रमुख एवं पंजाब के पूर्व उप मुख्यमंत्री सुखबीर सिंह बादल पर अमृतसर में स्वर्ण मंदिर के द्वार पर हुआ जानलेवा हमला भले ही पुलिस की सतर्कता से नाकाम हो गया हो, लेकिन इससे यह साफ संकेत मिलता है कि पंजाब में हालात ठीक नहीं हैं और अकाली दल के प्रति सिखों में रोष रत्तीभर भी कम नहीं हुआ है। हालांकि अकाली दल ने इस हमले के लिए राज्य की आम आदमी पार्टी सरकार को घेरा है, लेकिन इससे राज्य में शिरोमणि दल की घटती ताकत में कोई इजाफा होने वाला नहीं है। दूसरे पंजाब की भगवंत मान सरकार पर यह आरोप भी लगता रहा है कि उसके राज में प्रदेश में खालिस्तानी गतिविधियां तेजी से बढ़ी हैं। उल्लेखनीय है कि मंगलवार को हरमिंदर साहिब के प्रवेश द्वार बतौर धार्मिक सजा पहरा दे रहे सुखबीर सिंह बादल पर भीड़ में से नारायणसिंह चौड़ा नामक के एक व्यक्ति ने गोली चलाई। चौड़ा इससे ज्यादा कुछ करता, उसके पहले ही पुलिस ने उसे दबोच लिया। अमृतसर के पुलिस कमिश्नर गुरप्रीतसिंह भुल्लर के अनुसार पुलिस की सतर्कता और तैनाती के कारण यह हमला नाकाम रहा। बताया जाता है कि नारायण सिंह चौड़ा खालिस्तानी है और वह खालिस्तान लिबरेशन फ़ोर्स और अकाल फ़ेडरेशन से जुड़ा बताया जाता है। साथ ही बुड़ैल जेल ब्रेक मामले में भी वह अभियुक्त रहा है। पुलिस ने उसे 2013 में भी गिरफ्तार किया था। चौड़ा का सुखबीर पर हमले के पीछे मकसद क्या था, यह अभी स्पष्ट नहीं है। फिर भी स्वर्ण मंदिर परिसर में हत्या की कोशिश करना भी दुस्साहस है। गौरतलब है कि सिख परम्पराओं के अनुसार, अगर कोई सिख, सिख धर्म के सिद्धांतों के खिलाफ़ या सिख समुदाय की भावनाओं के विपरीत काम करता है तो उसे अकाल तख्त उसे सजा दे सकता है। ऐसे सजायाफ्ता को तनखैया कहा जाता है। दो दिसम्बर को सिख प्रतिनिधियों और सिखों के पांच प्रमुख धर्म स्थलों के मुखियाओं की अकाल तख्त में मीटिंग हुई थी। इसी में सुखबीर बादल समेत 2007 से 2017 के बीच उनके कैबिनेट में मंत्री रहे अधिकांश लोगों को धार्मिक सज़ा दी गई। उस अवधि में पंजाब में शिरोमणि अकाली दल-बीजेपी की गठबंधन सरकार थी। दिवंगत अकाली नेता प्रकाश सिंह बादल इस सरकार में मुख्यमंत्री थे जबकि सुखबीर बादल पार्टी के अध्यक्ष और उप मुख्यमंत्री थे। अकाली दल के नेतृत्व पर सिख धर्म के सिद्धांतों और सिख समुदाय की भावनाओं के विपरीत काम करने का आरोप है। साल 2015 में पंजाब के बरगारी में गुरु ग्रंथ साहिब का अपमान हुआ था। इसके विरोध में हुए प्रदर्शन के दौरान पुलिस फ़ायरिंग में दो सिख युवकों की मौत हो गई थी। डेरा सच्चा सौदा प्रमुख राम रहीम के अनुयायियों पर गुरू ग्रंथ साहब का अपमान करने का आरोप था। 2007 में बठिंडा के सलबतपुरा में जुटे अपने अनुयायियों के बीच राम रहीम ने गुरु गोबिंद सिंह की नकल की थी। इस घटना के बाद डेरा सच्चा सौदा के अनुयायियों और सिखों के बीच झड़प हुई थी। साल 2007 में अकाल तख्त ने राम रहीम के बहिष्कार का आदेश दिया था। हालांकि अब सुखबीर और उनके साथियों ने अकाल तख्त के सामने अपनी गलती स्वीकार करके सजा भुगतना भी शुरू कर दिया था। उसके बाद भी उन पर हमला होना बेहद चिंताजनक है। इस यह बात का परिचायक भी है कि अकालियों को अपनी भावी राजनीति की दिशा नए सिरे से तय करनी होगी। साथ ही मान सरकार को उन खालिस्तानियों पर सख्ती से नकेल कसनी होगी, जो विदेशी ताकतों की शह पर पंजाब को आतंकवाद के दिनो में ढकेलना चाहते हैं।

नजरिया

आरके सिन्हा

लेखक पूर्व सांसद हैं।

पाक में क्यों बह रहा मुसलमानों का खून?

पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों, विशेषकर शिया मुसलमानों, हिंदुओं, ईसाइयों और सिखों के साथ भेदभाव के कई जटिल कारण हैं, जिनमें धार्मिक कट्टरता, राजनीतिक उद्देश्य और कई सामाजिक-आर्थिक कारक शामिल हैं। कोई एकल कारण नहीं है, बल्कि ये कारक आपस में जुड़े हुए हैं। पाकिस्तान में कुछ अतिवादी आतंकी धार्मिक समूहों का प्रभाव काफी है , जो सुन्नी इस्लाम के एक विशेष व्याख्या का प्रचार करते हैं जो अन्य धर्मों और शिया इस्लाम के प्रति असहिष्णुता को बढ़ावा देता है।

मो हम्मद अली जिन्ना ने जिस इस्लामिक देश पाकिस्तान को बनवाया था, वहां मुसलमान ही अब मुसलमानों की जान के दुश्मन हो गये हैं। वहां सुन्नी और शिया समुदायों के बीच हुए हालिया संघर्ष में 100 से ज्यादा लोगों का खून बहा। हिंसा खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में अफगानिस्तान की सीमा से लगे कुर्रम जिले में हुई। सुन्नी बहुल पाकिस्तान में 24 करोड़ की आबादी में शिया मुस्लिम लगभग 15 प्रतिशत ही हैं। पाकिस्तान में शिया और सुन्नी मुसलमानों के बीच का हालिया संघर्ष जटिल है, जिसके जड़ें सदियों पुरानी धार्मिक और राजनीतिक विभाजन के इतिहास पर टिकी हैं।

वैसे तो कुछ कट्टरपंथी समूह तो दोनों पक्षों में ही मौजूद हैं जो हिंसा का इस्तेमाल करके ही अपने धार्मिक विचारों को आगे बढ़ाने में विश्वास रखते हैं। ये समूह साम्प्रदायिक भेदभाव को बढ़ावा देते हैं और हिंसा को सही ठहराते हैं। पाकिस्तान में सुन्नी समुदाय कतई शिया मुसलमानों को पसंद नहीं करते। इससे साफ है कि इस्लाम अपने मानने वालों को भी नहीं जोड़ता। हालांकि बातें बहुत होती हैं कि सारी दुनिया के मुसलमान एक हैं। लेकिन, ये अपनी इस बात को तो स्वयं ही बार-बार गलत साबित करते रहते हैं ।

पाकिस्तान में शिया मस्जिदों में धमाके और विस्फोट होना भी आम बात हो चुकी है। पेशावर में मई, 2022 में शुक्रवार को जुमे की नमाज के दौरान हुए दिल दहलाने वाले आत्मघाती बम विस्फोट में लगभग 60 से अधिक शिया नमाजी मारे गए थे।। हमलावरों ने निशाना बनाया था शिया मुसलमानों और उनकी इबादतगाह को। यह भी याद रखा जाए कि एक इस्लामिक मुल्क में ही शिया मुसलमानों का जीना मुश्किल हो गया है। वे हर वक्त डर-भय के साए में जीने को मजबूर बने रहते हैं। यह हाल उस पाकिस्तान का है जो मुसलमानों के वतन के रूप में बना था।

पेशावर की शिया मस्जिद में हुआ हमला कोई अपने आप में पहली बार नहीं हुआ था। वहां पर शिया मुसलमानों पर लगातार जुल्मों-सितम होते रहे हैं। पाकिस्तान में लगातार प्रतिबंधित संगठन शियाओं के खिलाफ़ खुलेआम प्रदर्शन भी करते हैं। इस तरह के ज्यादातर प्रदर्शन लाहौर, क्वेटा, पेशावर वगैरह शहरों में देखने को मिलते हैं। वहां पर शिया मुसलमानों के खिलाफ माहौल बनाने वाला साहित्य भी हर जगह आसानी से वहाँ पर आम लोगों को आसानी से उपलब्ध है।

तालिबान और इसी तरह के अन्य अतिवादी समूहों के विचारों का प्रभाव पाकिस्तान में है, जो साम्प्रदायिक संघर्षों को बढ़ावा देने में मदद करते हैं। यह समूह अपने एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए शिया-सुन्नी संघर्ष का उपयोग आमतौर पर करते हैं। पाकिस्तान में कुछ सियासी नेता साम्प्रदायिक तनाव को अपने राजनीतिक लाभ के लिए इस्तेमाल करते हैं। वे मतदाताओं को लुभाने के लिए और राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों को कमजोर करने के लिए साम्प्रदायिक भावनाओं को भड़काते हैं।

बेशक, पाकिस्तान सरकार की सुन्नी परस्त नीति के कारण साम्प्रदायिक हिंसा को रोकने में नाकामी, या यहां तक कि कुछ मामलों में इसमें सहयोग करने से, इस समस्या को और बढ़ावा मिलता है। पाकिस्तान में कुछ सुन्नी जिन्ना को भी शिया बताते हैं। कौन जाने की एक बार जिन्ना शिया साबित कर दिए गए तो उनकी विरासत को भी बिना कुछ जाने समझे ही पाकिस्तान में धूल में मिला दिया जायेगा।

पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों, विशेषकर शिया मुसलमानों, हिंदुओं, ईसाइयों और सिखों के साथ भेदभाव के कई जटिल कारण हैं, जिनमें धार्मिक कट्टरता, राजनीतिक उद्देश्य और कई सामाजिक-आर्थिक कारक शामिल हैं। कोई एकल कारण नहीं है, बल्कि ये कारक आपस में जुड़े हुए हैं। पाकिस्तान में कुछ अतिवादी आतंकी धार्मिक समूहों का प्रभाव काफी है, जो सुन्नी इस्लाम के एक विशेष व्याख्या का प्रचार करते हैं जो अन्य धर्मों और शिया इस्लाम के प्रति असहिष्णुता को बढ़ावा देता है।

कुछ राजनीतिक दलों और नेताओं ने अपनी राजनीतिक शक्ति बढ़ाने के लिए धार्मिक भावनाओं का इस्तेमाल किया है। वे अल्पसंख्यकों के खिलाफ भेदभाव को बढ़ावा देते हैं, उन्हें 'दूसरे' के रूप में चित्रित करते हैं, जिससे सामाजिक विभाजन बढ़ता है।

पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों को अक्सर सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित किया जाता है। उन्हें अच्छी शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य सेवा तक सीमित पहुँच होती है, जिससे वे और भी हाशिए पर आते ही चले जाते हैं। यह आर्थिक असमानता सामाजिक भेदभाव को और बढ़ाती है। एक समस्या यह भी है कि अल्पसंख्यकों के खिलाफ होने वाले अपराधों में अक्सर अपराधियों को सजा नहीं मिलती है, जिससे उन्हें अन्याय का सामना करना पड़ता है और भेदभाव जारी ही रहता है। न्याय प्रणाली में सुधारों की कमी से अल्पसंख्यकों का भरोसा कम होता है।

अगर आप पाकिस्तान के इतिहास को देखें तो पायेंगे कि पाकिस्तान की स्थापना के समय से ही अल्पसंख्यकों के साथ लगातार अत्याचार और भेदभाव होता रहा है। यह सांस्कृतिक और ऐतिहासिक कारक आज भी भेदभाव को बढ़ावा देते हैं।

पाकिस्तान में हिन्दुओं को भी नफरत की निगाह से देखने वाले भी कम नहीं हैं। हालांकि लगभग सारे पाकिस्तानियों के पुरखे हिन्दू ही तो थे। पाकिस्तान का इतिहास हिन्दुओं के खिलाफ नाइंसाफी और खून से लथपथ है। हालांकि 11 अगस्त,1947 को मोहम्मद अली जिन्ना ने एक भाषण में यह कहा था कि पाकिस्तान में सभी धर्मों के मानने वालों को अपने धार्मिक स्थानों में जाने की अनुमति होगी। यानी पाकिस्तान के विश्व मानचित्र में आने से सिर्फ तीन दिन पहले। उन्होंने अपनी कैबिनेट में जोगिन्दर नाथ मंडल नाम के एक हिन्दू को शामिल भी किया था। वे पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) से थे।मंडल को जिन्ना ने अपनी कैबिनेट में विधि मंत्री की जिम्मेदारी सौंपते हुए कहा था कि इस्लामिक पाकिस्तान में सबके हक सुरक्षित हैं। पर हुआ इसके ठीक विपरीत। मंडल पाकिस्तान के पहले और शायद आखिरी हिन्दू मंत्री बने। वे वहां पर अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के नेता थे। मंडल अपने को बाबा साहेब अंबेडकर के विचारों से बहुत प्रभावित बताते थे। वे दलित समुदाय से आते थे। वे 1946 में पंडित नेहरू के नेतृत्व में बनी अंतरिम सरकार में भी विधि मंत्री थे।

जिन्ना की 11 सितंबर, 1948 को मौत के साथ ही मंडल की वहां पर दुर्गति चालू हो गई थी। उनकी हर सलाह को नामंजूर कर दिया जाता। नतीजा यह हुआ कि वे पाकिस्तान को छोड़कर भारत आ गए। ये 1951 के आसपास की बातें हैं। उन्होंने आरोप लगाया था कि पाकिस्तान में हिन्दुओं के साथ नाइंसाफी होती है। इसलिए उनका पाकिस्तान में रहना मुमकिन नहीं होगा। मंडल उसके बाद कोलकत्ता आ गए। उनका 1968 में निधन हो गया। मंडल ने जो कहा था, वह अक्षरशः सही निकला। पाकिस्तान में हिन्दुओं के साथ कभी न्याय नहीं हुआ। इसी का नतीजा था कि जिन्ना का करीबी एक दलित हिन्दू मंत्री तक पाकिस्तान में नहीं रह सका। कुल मिलाकर बात यह है कि पाकिस्तान में अभी तो सिर्फ सुन्नी ही सुरक्षित हैं। आगे क्या होगा शायद खुदा को खुद भी पता न हो । आगे - आगे देखिये होता है क्या?

मुद्दा

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

लेखक स्तंभकार हैं।

गहरा होता बेरोजगारी का संकट

बेरोजगारी भारत के सबसे जटिल और गंभीर मुद्दों में से एक है, जो समाज और अर्थव्यवस्था दोनों पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। यह समस्या केवल नौकरी की कमी तक सीमित नहीं है; यह रोजगार की गुणवत्ता, स्थायित्व और आय के असमान वितरण से भी जुड़ी है। जब क्लर्क, चपरासी और सफाईकर्मी जैसे पदों के लिए एमए और पीएचडी जैसे उच्च शिक्षित लोग आवेदन करते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि हमारी रोजगार व्यवस्था में बुनियादी खामियाँ हैं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, भारत में कामकाजी उम्र की आबादी में केवल 3 प्रतिशत लोग बेरोजगार हैं। यह आँकड़ा पहली नजर में आशावादी प्रतीत होता है, लेकिन वास्तविकता इससे बहुत अलग है।

भारत में बेरोजगारी को मापने के लिए दो प्रमुख मानक अपनाए जाते हैं। पहला सामान्य स्थिति है जिसमें अगर व्यक्ति साल में 30 दिन से अधिक काम करता है, तो उसे बेरोजगार नहीं माना जाता। दूसरा साप्ताहिक स्थिति, जिसमें अगर व्यक्ति सप्ताह में एक घंटे भी काम करता है, तो उसे बेरोजगार की सूची से बाहर कर दिया जाता है। भारत में यह परिभाषा इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह न केवल वास्तविक बेरोजगारी को छुपाती है, बल्कि नीतियों को प्रभावी बनाने में भी बाधा उत्पन्न करती है।

यह परिभाषा इतनी व्यापक है कि इससे असली बेरोजगारों की गिनती ही नहीं होती। विकसित देशों की परिभाषा इससे बहुत अलग है। उदाहरण के लिए, अमेरिका में यदि व्यक्ति पिछले चार सप्ताह में सक्रिय रूप से नौकरी की तलाश कर रहा हो और काम के लिए उपलब्ध हो, तो उसे बेरोजगार माना जाता है। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुसार, 15 से 74 वर्ष का कोई भी व्यक्ति, जो सक्रिय रूप से नौकरी खोज रहा है, और जिसने पिछले चार सप्ताह में काम की तलाश की है या दो सप्ताह के भीतर काम शुरू करने के लिए उपलब्ध है, वह बेरोजगार की श्रेणी में आता है।

शिक्षा को हमेशा रोजगार का माध्यम माना जाता है। लेकिन भारत में यह धारणा बदलती हुई नजर आ रही है। पीरियोडिक लेबर फोर्स सर्वे (पी एल एफ एस) 2023-24 के अनुसार, बिना पढ़े-लिखे लोगों में 59.6 प्रतिशत रोजगार में हैं। इसके विपरीत, स्नातक और उससे अधिक शिक्षित लोगों में रोजगार दर केवल 57.5 प्रतिशत है। इंडिया एम्प्लॉयमेंट रिपोर्ट-2024 के आँकड़े दर्शाते हैं कि कम पढ़े-लिखे युवाओं में बेरोजगारी दर केवल 3.2 प्रतिशत है, जबकि उच्च शिक्षित वर्ग में यह दर 28.7 प्रतिशत तक पहुँच जाती है। यह विरोधाभास कई सवाल खड़े करता है। प्रश्न उठता है कि क्या हमारी शिक्षा प्रणाली रोजगारोन्मुखी है? क्या स्नातकों और पोस्ट-ग्रेजुएट्स के पास वह कौशल है, जिसकी बाजार को आवश्यकता है? क्या शिक्षा केवल एक डिग्री प्राप्त करने तक सीमित रह गई है? आँकड़े बताते हैं कि भारत में शिक्षा और रोजगार के बीच तालमेल की भारी कमी है। भारत में कामकाजी आबादी के बीच आय असमानता एक और बड़ी समस्या है। 78 प्रतिशत कामकाजी लोगों की मासिक आय 14,000 रुपये से कम है। स्वरोजगार करने वालों की औसत मासिक आय नौकरीपेशा व्यक्तियों से लगभग 7,423 कम है। नौकरीपेशा लोग औसतन रूपये 20,000 प्रति माह कमाते हैं, जबकि स्वरोजगार करने वालों की आय इससे बहुत पीछे है। साथ ही भारत में बड़ी संख्या में लोग ऐसे काम कर रहे हैं, जिनमें वे न्यूनतम वेतन भी प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। यह समस्या असंगठित क्षेत्रों में अधिक देखने को मिलती है। आय की इस असमानता का प्रभाव न केवल व्यक्तिगत जीवन पर पड़ता है, बल्कि यह देश की आर्थिक प्रगति को भी बाधित करता है।

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में बेरोजगारी का स्वरूप और इसके कारण अलग-अलग हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी की बात करें तो यहाँ ज्यादातर लोग कृषि और असंगठित क्षेत्रों पर निर्भर हैं। मौसमी रोजगार, कम आय, और स्थिरता की कमी यहाँ की प्रमुख समस्याएँ हैं। वहीं शहरी क्षेत्रों में बेरोजगारी में बेरोजगारी दर अधिक है क्योंकि प्रतिस्पर्धा तीव्र है और नौकरी के अवसर सीमित हैं। उच्च शिक्षित युवाओं में बेरोजगारी की दर शहरी क्षेत्रों में अधिक है। भारत में महिलाओं की रोजगार भागीदारी दर पुरुषों की तुलना में बहुत कम है। सामाजिक बंधन, शिक्षा की कमी, और परिवार की प्राथमिकताओं के कारण महिलाएँ कामकाजी क्षेत्र से दूर हो जाती हैं।

बेरोजगारी समस्या के मूल कारण की बात करें तो पहला है, शिक्षा और कौशल का असंतुलन होना, इससेहमारी शिक्षा प्रणाली रोजगारोन्मुखी नहीं है। इससे स्नातक होने के बावजूद युवाओं के पास बाजार में मांग के अनुसार कौशल की कमी है। दूसरा, असंगठित क्षेत्र का वर्चस्व है।भारत में अधिकांश कामकाजी लोग असंगठित क्षेत्र में हैं, जहाँ न तो स्थिर आय है और न ही सामाजिक सुरक्षा। तीसरा, सरकारी नौकरियों पर निर्भरता अधिक है। सरकारी नौकरियाँ सुरक्षित और सम्मानजनक मानी जाती हैं। इसलिए बड़ी संख्या में लोग इन्हीं पर निर्भर रहते हैं, जबकि निजी क्षेत्र में अवसर सीमित हैं। चौथा, स्वरोजगार में रुचि की कमी है। स्वरोजगार करने वालों के लिए संसाधनों और प्रोत्साहन का अभाव है।

इससे पहके कि यह और मुश्किलें पैदा करें इसका समाधान निकालने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए कुछ बातों पर ध्यान देना होगा। जैसे कि पहला, शिक्षा प्रणाली में सुधार किया जाना चाहिए। शिक्षा को व्यावसायिक और कौशल विकास के साथ जोड़ा जाए। पाठ्यक्रम को उद्योग की जरूरतों के अनुसार तैयार किया जाए। दूसरा,स्वरोजगार को बढ़ाया जाया।स्वरोजगार के लिए आसान ऋण और प्रशिक्षण उपलब्ध कराए जाएँ। युवाओं को उद्यमिता के लिए प्रोत्साहित किया जाए। सरकार ने इसपर काम किया है लेकिन यह पर्याप्त नहीं है क्योंकि लोगो में लोन का अभी भी भय है जिसे दूर करना सरकार की जिम्मेवारी है। तीसरा, असंगठित क्षेत्र में सुधार की जरूरत है। असंगठित क्षेत्र में काम करने वालों के लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ लाई जाएँ और इनका न्यूनतम वेतन सुनिश्चित किया जाए। चौथा, महिलाओं के लिए विशेष योजनाएँ लाई जाए। महिलाओं को कार्यक्षेत्र में लाने के लिए विशेष रोजगार योजनाएँ लागू की जाएँ। बाल देखभाल सुविधाएँ और लचीले कार्य घंटे प्रदान किए जाएँ। और पाँचवी,आधुनिक तकनीक और डिजिटल कौशल को बेहतर किया जाए। युवाओं को तकनीकी और डिजिटल कौशल से लैस किया जाए। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर रोजगार के अवसर बढ़ाए जाएँ।बेरोजगारी का संकट केवल आँकड़ों की समस्या नहीं है, यह करोड़ों लोगों की जिंदगी को सीधे प्रभावित करता है। रोजगार केवल आय का स्रोत नहीं है; यह आत्म-सम्मान, सामाजिक पहचान, और जीवन की गुणवत्ता से भी जुड़ा है। भारत को इस समस्या से उबरने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। सरकार, उद्योग, और समाज को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि रोजगार के अवसर केवल बढ़ें नहीं, बल्कि वे गुणवत्तापूर्ण और टिकाऊ भी हों। शिक्षा प्रणाली में सुधार, कौशल विकास, स्वरोजगार को बढ़ावा, और महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करके हम इस संकट को हल कर सकते हैं। इस दिशा में ईमानदारी और सतत प्रयास ही भारत को एक मजबूत और आत्मनिर्भर देश बना सकते हैं।

सोशल मीडिया से कितना सोशल रहें ?

अभिव्यक्ति

अदिति सिंह भदौरिया

लेखक स्तंभकार हैं।

बदलते समय में हमें अपने आस-पास के बदलते परिवेश को भी अपनाना चाहिए। लेकिन कितना अपना चाहिए यह कौन तय करेगा? हम बदलती हुई चीज़ों या माहौल को अपनाने के चक्कर में कहीं वास्तविकता से बहुत दूर तो नहीं होते जा रहे? हम यह समझ ही नहीं पा रहे कि दिखावे और असल जीवन में कितना अंतर है। टेक्नोलॉजी के चलते हम उस सब को सच लेते है , जो हमें दिखाई दे रहा है या यूँ कहें कि हमें दिखाया जा रहा है।

अभी हाल ही में मैंने एक खबर पढ़ी जिसमें एक कार हादसे का जिक्र था, क्योंकि कार चालक ने पूरी तरह ऑनलाइन ऐप के बताए रास्ते को ही सही मान लिया, और एक हादसे का शिकार बना। यहाँ यह नहीं कहा जा सकता कि ऑनलाइन मैप गलत है, बल्कि उनके बताए गए रास्तों के साथ-साथ अपना विवेक को भी जाग्रत रखें। कई बार देखा गया है कि ऑनलाइन तस्वीरों या दूसरों की वीडियो को देखकर हम आकर्षित हो जाते है। और अपने जीवन में वैसी ही नकल करने के चक्कर में अपने निजी जीवन को जीने की बजाए तमाशा बना देते है।

यह सिलसिला यहाँ नहीं रुकता बल्कि यह हमारे वास्तविक मित्रों की अपेक्षा आनलाइन लोगों को ही अपना मित्र मान लेते है। कई बार ऐसे ही लोगों के साथ हम भावुकता में अपने जीवन की कुछ ऐसी बातें बता देते है जो हमें अक्सर लोगों से छिपानी चाहिए। अपने कमजोर क्षणों की गलती को हमें सारी उम्र भुगतना पड़ता है। ऐसे में हमें मानसिक, शारीरिक एवं आर्थिक रूप से भी शोषण का शिकार होना पड़ता है। इससे गम्भीर बात यह है कि आजकल इन्टरनेट का उपयोग मात्र मनोरंजन के लिए नहीं बल्कि दूसरों को अपने मनोरंजन का साधन बनाने के लिए भी हो रहा है। हम मानसिक तौर के साथ-साथ भावनातम तौर पर भी कमजोर पड़ते जा रहे है। जितने ज़्यादा हम इन्टरनेट की आभासी दुनिया से जुड़ते जा रहे है , उतना ही हमारे रिश्तों के टूटने की सम्भावना बढ़ने लगती है।

हम यह नहीं कह सकते कि बच्चे ही इस आभासी दुनिया का शिकार बन रहे है। बच्चों के साथ-साथ बड़े भी इस दुष्प्रभाव से बच नहीं पा रहे है। फेक न्यूज़, हेट स्पीच, हैकिंग और भी कई साइबर अपराध भी समाज में अपने पैर पसार रहे है। बहुत बार सोशल मीडिया पर कंटेंट का कोई मालिक नहीं होता इसलिए मूल स्त्रोत का अभाव रहता है। सोशल मीडिया पर गलत विचारों को सांझा करने से देश की आंतरिक सुरक्षा भी खतरे में पड़ सकती है, लेकिन हमारा ध्यान हमेशा अपने से बाहर कभी जाता ही नहीं है। इन्टरनेट पर विचारों के मतभेद कब मनभेद में तब्दील हो जाते है,फिर उसी के परिणाम स्वरूप समाज में अयोग्यता और ईर्ष्या की भावना के रूप में बाहर आते है।

ऐसा बिल्कुल नहीं है कि सोशल मीडिया के सिर्फ नुकसान है, यदि हम इसका दूसरा रूप देखें तो यह इसके माध्यम से हम समाज में जागरूकता फैला सकते है। किसी भी नकरात्मकता के खिलाफ मिलकर आवाज़ उठा सकते है। दूर बैठे अपने प्रियजनों के सुख-दुःख की खबर ले सकते है। विभिन्न साइड्स की सहायता से बच्चों को किस दिशा में अपना भविष्य बनाना चाहिए, इस बात को निर्धारित कर सकते है। डिजिटल साक्षरता कौशल को विकसित कर सकते है।

लेकिन दुःख की बात है कि ऐसा कम हो रहा है और सोशल मीडिया के कारण लोगों में द्वेष, ईर्ष्या, बदले की भावना, दिखावा और उत्पीडन और अवसाद जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। सोशल मीडिया का इस्तेमाल ज़रूर करें, पर ध्यान इस बात पर रखें कि सोशल-मीडिया आपका इस्तेमाल ना कर सकें।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

सुरेश सौरभ

लेखक व्यंग्यकार है

...और अपना जलवा दिखा देंगे

किसी गाँव में एक हाथी आया। उस हाथी को छूकर समझने के लिए कुछ अंधे आये। किसी ने हाथी का पांव छूकर देखा, किसी ने उसका पेट, किसी ने उसकी सूंड, किसी ने पूंछ। अब जब अंधे अपने घर वापिस आये, तो कोई कह रहा था-हाथी खंभे जैसा था, कोई कह रहा था-हाथी ढोल जैसा था। कोई कह रहा था-हाथी बालों के गुच्छे जैसा था। सभी आपस में बहस पर बहस लगाकर झगड़ रहे थे। उलझ रहे थे। अगले जन्म में यही सब अंधे छोटे-मोटे न्यूज चैनलों के एंकर बने। सबने अपनी-अपनी रोजी-रोटी शुरू की, पर संस्कार वही पूर्व जन्म वाले उनके अंदर जड़ से कसकर जमे थे। हर बार अपना व्यक्तिगत दृष्टिकोण देते रहते, ऐसा होना चाहिए। पहले ऐसा ही था। ऐसा ही होने की परंपरा सदियों से चली आ रही है, ऐसा ही आगे भी होना चाहिए, जो हम कह रहे हैं, वही सत्य है। बाकी सब मिथ्या है। पूर्व जन्म में आपस में बहस करके लड़ते थे लेकिन इस जन्म में चैनलों पर बहस करते-करते, लोगों से बेवजह लड़ने-झगड़ने लगते। लोगों को बेवजह आपस में उलझा कर तीतर-बटेर की तरह लड़ाने-भिड़ाने लगते। हर मामले में अपना व्यक्तिगत दृष्टिकोण ही सर्वोपरि रखते। पहली बानगी-यह वैकेंसी बहुत लेट आयी है। इसे बहुत पहले ही आ जाना चाहिए था। मुझे लगता है, सरकार सिर्फ खानापूरी में ऐसे ही वैकेंसी निकालती रहेगी। करेगी कुछ नहीं, देखना फिर कोई न कोई नया अड़ंगा इस वैंकेंसी में आ जायेगा, बिना अड़ंगा कोई वैकेंसी कभी पूरी हुई है, जो इस बार पूरी होगी। तमाम बेरोजगार आस लगाए बैठे हैं। पता नहीं कब उन सबकी आस पूरी हो, कब उन सबके जीवन का उद्धार हो। दूसरी दहाड़ते हुए बानगी देखिए-मैं जो कह रहा हूं, वही सोलह आने सच है। चौबीस करैट शुद्ध है, अगर वहां सर्वे कराया जाए, खुदाई कराई जाए तो वही स्थान मिलेगा, वही सब दुर्लभ चीजें मिलेंगी, जिसकी मुंह फैलाकर आस लिए लोग बैठे हैं, उनकी आस एक दिन जरूर पूरी होगी। उनका विश्वास एक दिन जरूर फलीभूत होगा, यह मैं नहीं मेरे अंदर से करोड़ों आवाम की रूहें कह रही हैं, उनकी आवाजें कह रही हैं और मेरी आवाज को न कोई दबा सकता है, न कोई आज तक रोक सका है। न आगे भविष्य में कोई मुझे रोक सकता है। तीसरी बनगी चिल्लाते हुए-मेरा ही नहीं, बल्कि सारी जनता का यह मानना है कि हम यह मैच जरूर जीतेंगे। मैच ही नहीं पूरे देश की जनता का दिल जीतेंगे। इसके लिए हमारी जनता क्या नहीं कर रही है, देखिए कितने हवन, कितने यज्ञ-पूजन कितने यत्न से कर रही है। बच्चा-बच्चा यही कह रहा है, हम जीतेंगे और पूरे के पूरे दस के दस विकेट से जीतेंगे। धुंआधार ढोल-ताशे बजाकर जीतेंगे। पटाखे-गोले फोड़कर-दगाकर जीतेंगे। जब हमने बड़ी-बड़ी जंगे जीती हैं, तो ये छोटे-मोटे मैचों की क्या बिसात। चुटकी बजाकर यूं यूं जीतेंगे, हमारे खिलाड़ी, खिलाड़ी नहीं शेर हैं पूरे बब्बर शेर, आप लोग देखना, वे खेलेंगे ही नहीं, अपनी पूरी जी-जान से लड़ेंगे। यह मैच नहीं अपनी अस्मिता, अपनी प्रष्तिठा की लड़ाई है। आप और हम सब यही भगवान से दुआ करेंगे कि हम यह मैच जीतकर सारी दुनिया को अपना फुल टॉस जलवा दिखा देंगे। आखिर किसमें है दम जो हमें हरा दे। हम उनकी ही पिच पर उन्हें ऐसी पटखनी देंगे कि वैसी वे सोच भी न पाएंगे।

पुस्तक चर्चा

सुरेश उपाध्याय

समीक्षक

एक शहर के रचनात्मक अवदान से परिचय की अनूठी पहल

'घर का जोगी' बोधि प्रकाशन, जयपुर से हाल ही में प्रकाशित युवा साहित्यकार आशीष दशोत्तर की आलोचना पर केंद्रित पुस्तक है। आशीष दशोत्तर साहित्य की विभिन्न विधाओं यथा कहानी, कविता, गजल, नवगीत, व्यंग्य, आलोचना, साक्षात्कार आदि में सतत रचनारत हैं। अभी तक विभिन्न विधाओं में उनकी पंद्रह पुस्तकें प्रकाशित हुई है। इसके अलावा नवसाक्षर लेखन के तहत पांच पुस्तकें, आठ वृत्त चित्रों में संवाद लेखन एवं पार्श्व स्वर के साथ सामाजिक सरोकार पर कई पुस्तकों का सम्पादन व लेखन वे करते रहे हैं। आलोचना की इस पुस्तक में आशीष ने एक अभिनव पहल की है, आज के संदर्भ में अपने शहर 'रतलाम' के ज्ञात, अल्पज्ञात व अज्ञात रचनाकारों के कविकर्म से वाबस्ता करने की महती कोशिश की है।

किसी शहर की रचनाधर्मिता को लेकर मेरी जानकारी में यह प्रथम पहल है। अपनी बात में उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए वे इस अनुष्ठान को 'अपनी जमीन की कविता से कविता की जमीन की तलाश' निरुपित करते हैं। एक शहर के छप्पन रचनाकारो को खोजना, ढूंढना, उनके रचनाकर्म को सहेजना, संकलित करना, अध्ययन करना व प्रत्येक पर आलोचनात्मक आलेख तैयार करना एक श्रमसाध्य कार्य तो है ही, कृतिकार आशीष दशोत्तर की कर्मठता, लगन, निष्ठा, जीवटता, जिजीविषा, प्रतिबद्धता व रचनात्मक जिद् का सुफल ही कहा जा सकता है। एक शोधार्थी की तरह गहन खोजकर उन्होंने बगैर किसी आग्रह-पूर्वाग्रह के अपने शहर रतलाम के कवियों को एकसाथ देखने व दिखाने का महत्वपूर्ण उपक्रम किया है।

कवियों के रचना कर्म पर समीक्षात्मक आलेख उनकी मेधा, अध्ययन, दृष्टि व संकल्पशीलता के परिचायक हैं। पत्रकारिता के अपने आठ वर्ष केअनुभव का प्रभाव भी इसमे दिखाई देता है। हिंदी कविता के विभिन्न रंग, रुप, तेवर को जिस तरह से 'घरका जोगी' में संकलित किया गया है, उससे विभिन्न रंगों व खुशबुओं के पुष्पों से गूंथी हुई माला या पुष्प गुच्छ की संज्ञा देना, अतिश्योक्ति नहीं होगी। इस पुस्तक में कई नाम ऐसे हैं जो आज की पीढी के लिए नए हैं या पुरानी पीढ़ी भी जिन्हे भूल चूकी है। इस पुस्तक ने उनको स्मरण करने, उनके रचनाकर्म से परिचित होने तथा प्रेरणा प्राप्त करने की जरुरत रेखांकित की है।

नई कविता, अकविता, प्रगतिशील कविता, जनवादी कविता, छंद्युक्त कविता, छंदमुक्त कविता, गजल, गीत के प्रतिनिधि हस्ताक्षर में दिवंगत गोपाल सिंह नेपाली, विष्णु खरे, डॉ. चंद्रकांत देवताले, कैलास जायसवाल, जयकिरण, सुदीप बेनर्जी, डॉ. जयकुमार जलज, रमेश शर्मा, डॉ. हरिश पाठक से लेकर वर्तमान में भी सक्रिय निर्मल शर्मा, प्रोफेसर रतन चौहान, श्याम माहेश्वरी, डॉ. मुरलीधर चांदनीवाला, लक्ष्मीनारायण रजोरा (अलीक), जनेश्वर, प्रभा मुजुमदार,रश्मि रमानी, युसूफ जावेदी को देखना सुखद तो है ही, समृद्ध करता है।

कविता को मंच पर गौरव के साथ प्रतिष्ठित करने वाले दिवंगत कवि दिनकर सोनवलकर, डॉ. देवव्रत जोशी, प्राणवल्लभ गुप्त, पीरुलाल बादल से लेकर आज भी सक्रिय प्रोफेसर अजहर हाशमी की रचनाधर्मिता उत्साह व ऊर्जा का संचार करती है। रतलाम का साहित्य जगत में गौरवपूर्ण स्थान रहा है।लघु पत्रिका आंदोलन के दौर में यहां से 'प्रकाशित 'कंक' व 'आवेग' की चर्चाएं खूब हुई है। इस शहर की साहित्यिक बहसों व गोष्ठियों के चर्चे भी खूब हुए है और उनके अतिरंजनापूर्ण उल्लेख कोदिवंगत कथाकार व चित्रकार प्रभु जोशी के परिहास में कहे गए संवाद में देखा जा सकता है - 'क्यों रे, वैसी खूनी गोष्ठियां, अब भी होती है?' संवादहीनता, असहिष्णुता के बाहुल्य के इस समय में भाषाविद व साठ के दशक के महत्वपूर्ण गीतकार डॉ. जयकुमार जलज की चिंताए भी सहसा याद आ रही है - 'हम असहमत होते थे, लड़ते -झगड़ते थे लेकिन परस्पर प्रेम, सम्मान व संवाद बनाए रखते थे।'

इस शोधपरक आलोचना पुस्तक का स्वागत किया जाना चाहिए, यह पाठकों को भी सम्पन्न व समृद्ध करेगी, ऐसा विश्वास है। हिंदी साहित्य के शोधार्थियो के लिए यह एक महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ भीहो सकती है तथा अनेको नव रचनाकारों के लिए प्रेरणास्त्रोत भी हो सकती है। आशीषदशोत्तर को इस गुरुत्तर कार्य के सफल निर्वहन के लिए हार्दिक बधाई व साधुवाद।

पुस्तक- घर का जोगी
आलोचक- आशीष दशोत्तर
प्रकाशक - बोधि प्रकाशन, जयपुर
मूल्य - रु. 499/-

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज

लेखक स्तंभकार हैं।

गौर कीजिए, आचरण और व्यवहार कैसा है ?

अब यह तो हम ही जानते हैं कि हम कैसे हैं? लेकिन कभी इस बात पर भी विचार कर लेना चाहिए कि औरों की नजर में हम कैसे हैं? दरअसल हमें समय-समय पर अपना आत्म मूल्यांकन करते रहना चाहिए। इसी आधार पर खामियों को दूर करते हुए खूबियों को अपनाने की कोशिश में रहना चाहिए। जब ऐसी मानसिकता सतत प्रक्रिया के रूप में स्थापित हो जाती है, देखते ही देखते हमारे अपने व्यक्तित्व में निरंतर निखार आते चला जाता है। साधारण से असाधारण बनने का यही मार्ग है। जिसके चलते हमारा कृतित्व औरों के लिए अनुकरणीय बन जाता है। वास्तव में इस स्थिति तक आने के लिए हमें अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व के प्रति आलोचक दृष्टि रखना नितांत आवश्यक है।

यह धारणा कि 'मैं ही सही हूं', सिवाय अपने आप को अंधेरे में रखने के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। वास्तव में एकतरफा सोच के नकारात्मक परिणाम सामने आया करते हैं। वैसे भी बनावट की बुनावट का ताना-बाना अधिक समय तक टिकाऊ नहीं रहता। औरों की नजरों में हमारी जो स्थिति है, वही एक ऐसा वास्तविक दर्पण है जिसमें हम अपने आप को संपूर्ण रूप से निहार सकते हैं। दरअसल अपने आप को अपनी ही नजरों में तोलते

रहना चाहिए। अनेक अवसरों पर ऐसा होता है कि हम सही होते हुए भी गलत करार दिए जा सकते हैं। वैसे यह भी बहुत स्वाभाविक रूप से हो सकता है कि हम वास्तव में गलत है, लेकिन जमाना हमें सही ठहराता हो। लेकिन आखिरकार भ्रम के बादल छंट ही जाते है।

व्यक्तिगत एवं सामाजिक परिवेश में हमें अपनी भूमिका पर गंभीरतापूर्वक विचार कर लेना चाहिए। जीवन की सार्थकता इसी में है कि हम अपनी नजरों में भी सही रहे और औरों की नजरों में भी सही रहे। दरअसल अंतरंग और बहिरंग की एकरूपता के चलते आत्मविश्वास के साथ-साथ जनविश्वास भी अर्जित किया जा सकता है। जिसके चलते हमारे अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व की प्रामाणिकता और प्रासंगिकता पर सार्वजनिक मोहर लगा करती है। वास्तव में अच्छी छवि बनाना एकबारगी सहज सरल हो सकता है, लेकिन उस छवि को निरंतर बरकरार रखना आसान नहीं होता। फिर भी हमारी कोशिश रहना चाहिए कि देश काल और परिस्थिति के मान से हम अपने व्यक्तित्व का निर्माण करें।

दोहरा चरित्र लंबी दूरी तक का सफर तय नहीं कर सकता। इन दिनों व्यक्तिगत एवं सामाजिक परिवेश में चाहे कितना भी आडंबर क्यों न किया जाए, आखिरकार वास्तविकता जग जाहिर हो ही जाती है। इसका साफ कारण यह कि अब आम नागरिकों की तर्कशक्ति में आमूलचूल परिवर्तन आता जा रहा है। तमाम तरह के रीति रिवाज और परंपराओं को तर्क की कसौटी पर परखा जाने लगा है। ऐसी स्थिति में व्यक्तिविशेष के आभामंडल की गहराई तक जाना कौन बड़ी बात है! वैसे भी बनावटी व्यक्तित्व सामाजिक परिवेश में सहज व्यक्तित्व के सम्मुख कहीं नहीं ठहर पाता। आजकल के दौर में झूठ फरेब और छल कपट का बोलबाला चाहे हो, लेकिन शालीनता और सज्जनता का मान-सम्मान चिरस्थायी हुआ करता है।

इन तमाम बातों के मद्देनजर हमारा निरंतर यह प्रयास रहना चाहिए कि व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक जीवन में हम कहीं न कहीं किसी न किसी के लिए आदर्श बन सके। व्यवहार में देखा गया है कि हर सफल व्यक्ति के पदचिन्हों पर चलने की कोशिश की जाने लगती है। साहित्यिक दृष्टि से कहानी और कविताओं का जो भी महत्व हो, लेकिन स्थापित महापुरुषों की जीवनी एवं उनसे जुड़े संस्मरण कहीं अधिक गहरे रूप से पाठकों पर प्रभाव छोड़ते हैं। हालांकि हर कोई महापुरुष तो नहीं बन सकता, लेकिन उनके पदचिन्हों पर चलकर मन का सुकून पाते हुए सही राह का चयन तो कर ही सकता है। इसके चलते और कुछ नहीं तो उच्च स्तरीय आदर्श का सिरा पकड़कर एक अनूठे गर्व की अनुभूति तो कर ही सकता है।

काम के दबाव में खत्म होता सहज जीवन

सरोकार

डॉ. आशा उपवंशी 'अदिति'

लेखक साहित्यकार हैं।

कैद में तकनीक ने ऐसे है जकड़ा।
चलता फिरता एक दफ़्तर हो गया हूँ।।

सुबह-सुबह जिले के एक साथी अधिकारी की देहांत की अकल्पनीय खबर सुनने मिली। संदेश में कहीं इस बात का जिक्र नहीं था कि मृत्यु कैसे हुई। आजकल एक्सीडेंट की घटना बहुत ज्यादा होने और सप्ताहांत का दिन होने के कारण लगा शायद कहीं कोई दुर्घटना के कारण तो यह दुखद घटना नहीं हुई क्योंकि वो बीमार हैं ऐसा तो पता नहीं चला था।

मन नहीं माना तो उनके विभाग के ही एक अधीनस्थ को फोन लगाकर पूरी घटना जानने का प्रयास किया। फोन लगातार व्यस्त आने के बाद जब बात हुई तो पता चला कि कल रात लगातार एक के बाद एक 2 बार हार्ट अटैक आने से दूसरे अटैक के बाद वो इस दुनिया और सरकारी काम को हमेशा के लिए अलविदा कहकर आज़ाद हो गए। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति दे। हार्ट अटैक से देहांत की खबर ने झकझोर कर रख दिया और सोचने पर मजबूर कर दिया कि क्या आजकल का सरकारी कामकाज का बोझ और तनाव अधिकारी कर्मचारियों को अंदर ही अंदर इतना खोखला करता जा रहा है कि वो अपने स्वास्थ्य का भी ठीक से ध्यान नहीं रख पा रहे हैं। गहराई तक सोचा तो अंदर से जवाब मिला कि हाँ, यही आज की सच्चाई है।

आज के समय में सरकारी कामकाज की शैली और दायरा बदल चुका है। पहले कहा जाता था कि सरकारी अधिकारी/कर्मचारी सरकार के दामाद होते हैं यानि उन्हें काम करने की जरूरत नही होती पर ये धारणा अब बिल्कुल ही बदल चुकी है।

आज के समय में किसी भी स्तर के कार्यालय प्रमुख अधिकारियों का काम करने का कोई निर्धारित समय नहीं होता, कार्य की अधिकता एवं अधिकारी/कर्मचारियों की कमी के कारण अधिकतर कार्यालय शासकीय समय के बाद भी 2 से 3 घण्टे तक देर रात कार्य करने के लिए मजबूर रहते हैं। अधिकतर विभागों में अधिकारी/कर्मचारियों की इतनी कमी है कि 1-1 कर्मचारी 3-3 कर्मचारियों का काम करने के लिए मजबूर हैं। सुविधाओं के नाम पर काम चलाऊ सुविधाएं भी कई कार्यालयों में नहीं हैं।

उत्तरदायित्वता की बात करें तो आज के समय में भले अधीनस्थ कार्य न करें पर उन पर कार्रवाई करने का अधिकार तो जिला स्तर के अधिकारी के पास नहीं है पर जिले के कार्य की पूरी जिम्मेदारी उस जिला अधिकारी की होती है, जवाब सिर्फ और सिर्फ उन्हें ही देना होता है। जिला स्तर के अधिकारियों का ज्यादा से ज्यादा समय जल्दी जल्दी बदलते जिले के सबसे बड़े अधिकारियों एवं विभाग प्रमुखों से समन्वय बिठाने में भी चला जाता है। जिला स्तर के अधिकारी भी इंसान ही हैं तो हर तरह के अधिकारियों के व्यवहार के अनुसार बार बार खुद को ढालना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है और यहीं से शुरुआत होती है उनके जीवन में तनाव की। जिला स्तर पर रात-दिन होती बैठकें, असमय होती ऑनलाइन बैठकें, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग ने भी तनाव बढ़ाने में सहयोग ही किया है। वरिष्ठ अधिकारियों का कार्यक्षमता से अधिक अपेक्षाओं और छोटे-छोटे समय-सीमा में कार्यों को पूर्ण करने का दवाब कहीं न कहीं अधिकारियों को अंदर ही अंदर खोखला करता जा रहा है।

अधिकारियों के जीवन में तनाव का एक और कारण वर्क-लाइफ असंतुलन भी है। बार-बार होते स्थान परिवर्तन एवं छोटी जगहों में सुविधाओं की कमी के कारण अधिकांश अधिकारी अपने कार्यस्थल पर परिवार के साथ नहीं रहते हैं जिसके कारण भी काम के दबाव के समय जिस भावनात्मक सहयोग की उन्हें जरूरत होती है वह उन्हें नहीं मिल पाता है और वो लगातार कार्य के दबाव और तनाव में जीते रहते हैं।

आज के समय में सरकारी अधिकारी/कर्मचारियों पर काम का दबाव इतना ज्यादा रहता है कि शायद ही कोई सरकारी अधिकारी/कर्मचारी होगा जो अपनी व्यक्तिगत दिनचर्या/व्यक्तिगत स्वास्थ्य की आवश्यक जरूरतों को वर्ष के हर दिन पूरा कर पाता होगा। यह अत्यंत ही विचारणीय विषय है।

जीवन शैली

अनिल त्रिवेदी

लेखक अभिभाषक हैं।

जीवन की ऊर्जा का मूल प्रवाह है आहार

मनुष्य एक तरह से अपनी अनियंत्रित मनमर्जी का मालिक है। मनुष्य ही अकेला ऐसा प्राणी है जो अकेले अपने पोषण के लिए ही महज़ आहार नहीं करता अपनी रूचि, स्वाद और हैसियत के आधार पर भी मनुष्य स्वयं का आहार तय करता है और मन को संतुष्ट करने के लिए भी आहार ग्रहण करता है। मनुष्य की आहार प्रक्रिया में ऐसा भी कुछ नहीं है कि हमेशा वह भूख लगने पर ही खाएगा वह कभी भी और कहीं भी खा सकता है। यही बात सोचने समझने और दूसरों की जिंदगी में हस्तक्षेप करने को लेकर भी है इसी तरह मनुष्य अपने भोजन को लेकर कभी भी स्थिरचित्त नहीं रह पाता है । जब जो इच्छा हो तब वह खा सकता है इच्छा न हो तो भी कोई खाने की वस्तु दिखाई दी कि खाने का मन हो गया और उसे खाने लगा इसी से मनुष्य से भिन्न जीवों के जीवन और आहार क्रम में एक तरह की एक रूपता दिखाई देती है वैसी मनुष्यों के रहन सहन और जीवन में नहीं मिलती हैं।

जीव,जगत और जीवन इनके आसपास ही तमाम विचार, मत एवं मतान्तर जन्म लेते हैं, विस्तारित होते रहते हैं और विविध रूप- स्वरूपों में दुनिया के लोकमानस में दर्ज हो जाते हैं। ये विविध विचार और मत मतान्तर निरन्तर कालक्रमानुसार लोकमानस की स्मृतियों में उदित या अस्त होते ही रहते हैं। जगत में व्याप्त अनेकानेक मत मतान्तर में गहराई से झांकने से यह बात एकदम समझ आने लगती है कि अलग अलग मनुष्य अपने आस-पास को कैसे देखते सोचते और समझते है? इसका ज्ञान स्वयं को और दूसरों को या समूची दुनिया जहान को भी होता ही रहता है। यों तो मत या राय भी एक विचार ही है और मतान्तर भी विचार से अलहदा एक और विचार ही तो है। किसी भी जीव को जीवन को ऊर्जावान बनाए रखने के लिए नियमित आहार का जीव की जरूरत अनुसार निरन्तर मिलते रहना जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। मनुष्य और मनुष्येतर अन्य जीव की आहार प्रक्रिया में भोजन की प्राकृतिक श्रृंखला एक समान है। जलचर,नभचर और थलचर तीनों श्रेणी के जीव अपनी प्राकृतिक आहार श्रृंखला पर ही मूलत: निर्भर है। इसके बावजूद भी मनुष्य समाज ने आहार श्रृंखला में इतने अधिक मत मतान्तरों की रचना की है वो मनुष्यों के आहार क्रम के इतिहास का एक अलग और अनोखा आयाम है। मनुष्येत्तर जीव जो स्वतंत्र हैं उनका जीवन तो प्रकृति में जो भी उनकी आहार श्रृंखला के रूप में उस जगह पर उपलब्ध है कमोबेश उसी पर उनके समूचे जीवनकाल में आहार की प्राकृतिक निर्भरता चलती ही रहती है। यदि कोई जीव मनुष्य का पालतू साथी सहयोगी है तो पालनकर्ता मनुष्य जो आहार उन्हें खिलाता है उसी पर उन्हें निर्भर होना होता है। पर दुनिया भर के मनुष्य अपने स्वयं के आहार को लेकर कभी संतुष्ट नहीं होते हैं, साथ ही दूसरे मनुष्य के खान-पान, रहन-सहन पर नाना सवाल और अनर्गल टिका टिप्पणी मनुष्यों में हर समय बिना रुके और सोचे समझे अंतहीन विध्वंसक या अनर्गल टीका टिप्पणियां जाने अनजाने चलती ही रहती है, इस के उलट या अलावा कुछ न कुछ नया करने और खोजते रहने की एक अंतहीन और अनोखी श्रृंखला भी मानवीय चिंतन प्रक्रिया में स्पष्टत: दिखाई पड़ती है।

मनुष्य एक तरह से अपनी अनियंत्रित मनमर्जी का मालिक है। मनुष्य ही अकेला ऐसा प्राणी है जो अकेले अपने पोषण के लिए ही महज़ आहार नहीं करता अपनी रूचि, स्वाद और हैसियत के आधार पर भी मनुष्य स्वयं का आहार तय करता है और मन को संतुष्ट करने के लिए भी आहार ग्रहण करता है। मनुष्य की आहार प्रक्रिया में ऐसा भी कुछ नहीं है कि हमेशा वह भूख लगने पर ही खाएगा वह कभी भी और कहीं भी खा सकता है। यही बात सोचने समझने और दूसरों की जिंदगी में हस्तक्षेप करने को लेकर भी है इसी तरह मनुष्य अपने भोजन को लेकर कभी भी स्थिरचित्त नहीं रह पाता है । जब जो इच्छा हो तब वह खा सकता है इच्छा न हो तो भी कोई खाने की वस्तु दिखाई दी कि खाने का मन हो गया और उसे खाने लगा इसी से मनुष्य से भिन्न जीवों के जीवन और आहार क्रम में एक तरह की एक रूपता दिखाई देती है वैसी मनुष्यों के रहन सहन और जीवन में नहीं मिलती हैं। शायद यही वजह है कि मनुष्य समाज ने अपने जीवन क्रम में आहार को लेकर इतने गहरे और व्यापक रूप स्वरूप में चिन्तन मनन और मत मतान्तरों सहित सैद्धांतिक मतभेदों के विभिन्न शास्त्रों का सृजन किया है जिसके फलस्वरूप आहार शास्त्रियों और आहार शास्त्र का एक अंतहीन सिलसिला या फौज खड़ी हो गई है। जो अपने अपने सैद्धांतिक मतभेदों को लेकर आपस में अकारण सैद्धांतिक मोहवश शाब्दिक युद्ध करती रहती है। आहार मनुष्य समाज का एक अनोखा और रोचक जीवन दर्शन बन गया है।

मूल रूप से जीव जगत शाकाहारी और मांसाहारी दो रूप स्वरूप में बटा हुआ है। पर मनुष्य ने शाकाहार और मांसाहार में इतनी अधिक विविधताओं और व्यापक स्तर पर आहार जन्य विविधताओं को सृजनात्मक एवं विध्वंसात्मक रूप से विकसित किया है जिसे देखकर लगता है कि आहार मनुष्य की प्राकृतिक क्षुधा की संतुष्टि के लिए है या सृजनात्मक शक्ति की भूख को शांत करने के लिए है। शाकाहार और मांसाहार दोनों में जैव विविधता अंतहीन हैं। शाकाहार में भी मत-मतांतर अंतहीन हैं मांसाहार करने वाला शाकाहारी मनुष्य पर दया करने के भाव से चिंता व्यक्त करता है कि शाकाहारी लोग आजीवन कैसे शाकाहारी रह पाते हैं और शाकाहारी लोगों को व्यंग्यात्मक अंदाज में धास फूंस खाने वाले की संज्ञा देता रहता है। शाकाहारी लोगों के मन में यह उधेड़बुन चलती रहती हैं किसी की जिन्दगी को समाप्त कर कैसे किसी जीव को अपने निजी आहार में बदल सकते हैं? मनुष्य के पेट की क्षमता तो सीमित है पर मनुष्य के मन की क्षमता अनन्त है। इसी से मनुष्य ने अपने आहार को लेकर एक से एक बढ़कर विविधता वाले अनोखे आहारों के खाने, पकाने और खिलाने को लेकर शास्त्र को रच दिया। जबकि महात्मा गांधी ने मनुष्य की आहार प्रक्रिया को लेकर जो सूत्र दिया वह एक दम सहज सरल है कि भूख लगने पर खाना प्रकृति है और बिना भूख के खाना विकृति है। मनुष्य सरलता को सहजता से आत्मसात नहीं कर पाता इसी से मनुष्य की आहार प्रक्रिया दिन ब दिन जटिलताओं को अपनाने की दिशा में अग्रसर होती दिखाई देती है।

आहार जीवन की अनिवार्य ऊर्जा का मूल स्त्रोत है, आहार के बिना जीवन की गति धीमी हो जाती है और आहार की अति या कमी से भी जीवन का प्राकृतिक स्वरूप बदलने लगता है। आज की दुनिया में आहार दुनिया का सबसे बड़ा व्यापार व्यवसाय बन चुका है। आहार जो जीवन की अनिवार्य ऊर्जा हैं वह उस रूप में तो है पर मनुष्य के मन की अंतहीन हलचलों के कारण केवल जीवन का प्रवाह ही नहीं दुनिया भर में आहार सबसे बड़ी व्यापार व्यवसाय की हलचल और रोजगार बनकर एक अंतहीन गतिविधियों का ऐसा क्रम बन गया है जो जीवन भर चलता रहता है और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को नये नये प्रयोग करने हेतु आधारभूमि उपलब्ध करा देता है। आहार हेतु उपलब्ध प्राकृतिक श्रृंखला और मनुष्य निर्मित आहार का व्यापार व्यवसाय प्रकृति और मनुष्य के कृतित्व की अनोखी जुगलबंदी बनकर तारक मारक और उद्धारक क्षमताओं का त्रिवेणी संगम बन गई है इस में सवाल यह उठता है कि आहार जीवन की महज़ मूल ऊर्जा का स्त्रोत हैं या जीवन का प्राकृतिक प्रवाह है! जो जीव, जगत, वनस्पति और जीवन में अनवरत प्रवाहित होता रहता है।

तापमान बढ़ने से सेहत पर पड़ रहा असर, किसानों की बढ़ी चिंता

आसमान में बादलों ने डाला डेरा, चार दिन में 7 डिग्री बढ़ा न्यूनतम तापमान

बैतूल। पिछले-दो तीन दिनों से आसमान में बादलों ने डेरा डाल रखा है। कभी धूप खिल रही है, तो कभी बादल छा रहे है। जिससे तापमान में भी बढ़ोत्तरी हुई है। बढ़ते तापमान से किसान चिंतित है। क्योंकि तापमान बढ़ेगा तो इसका असर रबी फसलों पर पड़ेगा। फसलों के पीली होने की संभावना रहेगी और उत्पादन पर भी असर पड़ेगा। इधर कृषि अधिकारियों के अनुसार रात के समय फसलों में श्वसन की रफ्तार बढ़ जाती है। रबी फसल के लिए 8 से 12 डिग्री रात का तापमान फायदेमंद रहता है, लेकिन अभी तापमान 16 डिग्री बना हुआ है। ऐसे में फसलों के लिए यह तापमान नुकसानदायक हो सकता है, क्योंकि अंकुरण के वक्त मापतान 8 से 12 डिग्री के बीच होना चाहिए। जहां फसल अंकुरित हो गई है और अभी तना भरपूर विकसित नहीं हुआ है। ऐसे में फसलों का विकास प्रभावित होगा। कृषि अधिकारियों की माने तो दिन और रात के तापमान का फसलों पर अलग-अलग प्रभाव होता है। रात में श्वसन (रेस्पिरेशन) की रफ्तार बढ़ जाती है। उसके लिए न्यूनतम तापमान 5 से 6 डिग्री होनी चाहिए। वर्तमान में 16 डिग्री तापमान रिकॉर्ड किया जा रहा है।

बढ़ते पारे से गुल हुआ सर्दी का अहसास: बीते दो-तीन दिन से बढ़ते पारे ने सर्दी का अहसास गुल कर चुका है। शाम के समय भी हल्की सर्दी का अहसास बनता बिगड़ रहा है। दिन में स्वेटर, जैकेट पहनने पर बेचैनी और गर्मी का अहसास हो रहा है। दिन और रात का बढ़ा हुआ पारा, पिछले दो-तीन दिन से स्थिर बने रहने से यह स्थिति बन रही है। हालांकि मौसम विभाग आने वाले दिनों में बारिश होने और तापमान में फिर से गिरावट की संभावना जता रहा है। इधर बुधवार को शहर में अधिकतम तापमान 28 डिग्री और न्यूनतम 16.5 डिग्री रिकॉर्ड किया गया है। मौसम विभाग के अनुसार आगामी समय भी बैतूल

जिले के कुछ हिस्सों में हल्के बादल छाए रहने का अनुमान है।

तीन-चार दिन में 8.8 से सीधे 16.5 पर पहुंचा पारा : नवंबर के अंतिम दिन यानि 30 नवंबर को बैतूल जिले का अधिकतम तापमान 25.2 और न्यूनतम तापमान 8.8 डिग्री दर्ज किया गया था। इसके बाद तापमान में लगातार बढ़ोत्तरी देखी जा रही है। 1 दिसंबर को जिले का अधिकतम तापमान 24.8 और न्यूनतम 9.5 डिग्री दर्ज किया गया। इसके बाद 2 दिसंबर को तापमान 27.8 और 13.4 डिग्री, 3 दिसंबर को 28.0 और 14.2 डिग्री तथा 4 दिसंबर को 28.0 और 16.5 डिग्री तक पहुंच गया। पिछले चार दिनों में जिले के अधिकतम तापमान में 3.0 डिग्री और न्यूनतम तापमान में 7.0 डिग्री की बढ़त हुई है।

तापमान बढ़ने से फसलों पर यह पड़ेगा असर: सर्दी के मौसम में एकदम से तापमान में बढ़ोतरी आने के कारण किसानों की चिंता बढ़ गई है। क्योंकि इस साल जिले में गेहूं की फसल लक्ष्य के मुकाबले ज्यादा बोई गई है। इसके अलावा सर्दी में तापमान बढने से चना-मटर पर भी असर पड़ने की संभावना है। कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार गेहूं फसल के लिए 15 डिग्री से कम तापमान अनुकूल होता है। इससे अधिक तापमान बढ़ने पर सिंचाई अधिक करनी पड़ती है। कृषि अधिकारियों का कहना है कि यह समय गेहूं, चना और मटर की फसल के बढने का है। ऐसे में फसल को अच्छी बढ़त के लिए ठंडे मौसम की आवश्यकता रहती है, लेकिन इन दिनों तापमान अधिक बना हुआ है। अधिकारियों के अनुसार गेहूं, चना और मटर को अच्छी बढ़त व अच्छी फसल के लिए न्यूनतम 7 से 8 डिग्री सेल्सियस तापमान होना चाहिए। इतने या इससे कम तापमान में इन फसलों की अच्छी बढ़ोतरी होती है। इससे फसल उत्पादन अच्छा रहता है।

लोगों की सेहत पर मौसम का असर: मौसम में अचानक बदलाव का असर लोगों के स्वास्थ्य पर भी पड़ने लगा है। लोग सर्दी-जुकाम, बुखार, वायरल फीवर जैसी बीमारियों से पीड़ित हो रहे है। अस्पताल की ओपीडी भी बढक़र 500 के आसपास पहुंच गई है। जिसमें 65 प्रतिशत संख्या वायरल फीवर के मरीजों की है। जिन्हें शरीर में दर्द, गले में खरास, मांसपेशियों और जोड़ों में दर्द, कमजोरी महसूस होना, सिर दर्द होने के साथ तेज बुखार, खांसी की शिकायत हो रही है। जिला अस्पताल के सिविल सर्जन एवं शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. जगदीश घोरे ने बताया कि मौसम में बदलाव के कारण सर्दी, जुकाम, उल्टी-दस्त और बुखार के मरीज बढ़ रहे हैं। लोगों को इस मौसम में खानापान पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इनका कहना है -

आसमान में बादल छाने से गेहूं की फसल पर आंशिक असर पड़ेगा। वैसे बैतूल जिले में 15 नवंबर के बाद ही बुआई शुरू होती है। अभी गेहूं प्रारंभिक स्टेज पर है। बादल छाने से चने और मटर में इल्लियों का खतरा रहता है। सब्जियों की फसल को भी नुकसान हो सकता है।

- व्हीके वर्मा, प्रभारी कृषि विज्ञान केन्द्र, बैतूल बाजार

अतिक्रमण हटाकर नाली एवं सड़क बनाने की मांग

वार्डवासियों ने कलेक्टर-एसपी को ज्ञापन सौंपकर की मांग

बैतूल। शहर के सदर क्षैत्र में इटारसी रोड पर हैवी ट्रेफिक के कारण आए दिन दुर्घटनाएं होती रहती है, इस रोड से सटे भगतसिंह वार्ड एवं चन्द्रशेखर वार्ड के रहवासी बड़ी संख्या में मंगलवार 3 दिसम्बर को जनसुनवाई में पहुंचे और कलेक्टर-एसपी को ज्ञापन सौंपकर इस रोड पर अतिक्रमण को हटाकर यातायात व्यवस्था को सुचारू रूप से करने की मांग की। इसके अलावा उन्होंने सिमैया कॉम्प्लेक्स एवं कालभोर के मकान के मध्य मुख्य सड़क के दोनों ओर से अतिक्रमण हटाकर पक्की आरसीसी नाली निर्माण की मांग भी वार्डवासियों ने की है।

इसके संबंध में भी एक ज्ञापन अलग से सौंपा गया, जिसमें बताया है कि भगतसिंह वार्ड एवं चन्द्रशेखर वार्ड में इटारसी रोड से अंदर प्रवेश करने हेतु मुख्य सडक़ दशरथ सिमैंया के मकान से प्रेमलाल साहू से होते हुए चौखेलाल दीवान के मकान तक मुख्य सडक़ पर दोनो ओर अवैध सीढ़ी एवं छज्जा निर्माण करने से सडक़ की चौड़ाई बहुत कम हो गई है। जिसके कारण बड़े वाहन अंदा प्रवेश नहीं कर पाते, खासकर किसी दुर्घटना आदि के समय आपातकालीन वाहन जैसे अग्निशामक यंत्र के वाहन प्रवेश नही कर सकते, साथ ही सार्वजनिक कार्यक्रमों जैसे गणेश व दुर्गा प्रतिमा लाने में भी बहुत परेशानी होती और मोहल्ले वाले उत्सव भी नही मना पाते है। कम चौड़ाई की सडक़ से मोहल्ले से गुजरने वाले वाहन मालिकों से अक्सर आए दिन विवाद होता है। यहां की नाली क्षतिग्रस्त होने से वार्ड का पानी नाले में नही पहुंच पा रहा है, जिससे गंदगी एवं मच्छर भी होते है। सडक़-नाली की समस्या के निराकरण हेतु नपाध्यक्षा बैतूल को बुलवाकर मौके का निरीक्षण भी करवाया था, उन्होने उक्त अतिक्रमण को हटाकर पक्की कवर्ड नाली एवं पक्की सड़क निर्माण करवाए जाने का आश्वासन भी दिया था, लेकिन अभी तक कोई कार्यवाही नहीं हुई। जिससे वार्डवासियों में आक्रोश है। चन्द्रशेखर वार्डवासियों ने इटारसी रोड से अंदर प्रवेश करने वाली मुख्य सडक़ के अवैध निर्माण को हटाकर सडक़ की चौड़ाई बढ़ाने और आरसीसी नाली निर्माण कराए जाने की मांग की है। ज्ञापन सौंपने के दौरान दयाराम यादव, मंगलमूर्ति वराठे, राजा वागद्रे, रघुनाथ डोंगरे, कृष्णा वागद्रे, संजय द्विवेदी, डॉ. पाटनकर, पवन यादव, अरविंद साबले, दिनेश वागद्रे, संजय पटवा, चंद्रशेखर यादव, राधेश्याम सिन्हा, ज्ञानेश्वर गोठेकर सहित बड़ी संख्या में वार्डवासी मौजूद थे।

सदर क्षेत्र में इटारसी रोड पर यातायात व्यवस्था को सुचारू करने की मांग

बैतूल। इस रोड से सटे वार्ड के रहवासी बड़ी संख्या में मंगलवार जनसुनवाई में पहुंचे और कलेक्टर-एसपी को ज्ञापन सौंपकर इस रोड पर अतिक्रमण को हटाकर यातायात व्यवस्था को सुचारू रूप से करने की मांग की। ज्ञापन में बताया कि इटारसी रोड सदर बैतूल पर गेंदा चौक से बसंत पेट्रोल पंप तक वाली मुख्य पीडब्ल्यूडी सडक़ पर विभिन्न शासकीय कार्यालय, कन्या स्कूल सदर, शासकीय आई.टी.आई., मंगल भवन, भारतीय खाद्य निगम बैतूल आईल मील, दुग्ध डेयरी शासकीय हॉस्पिटल, पेट्रोल पंप मंदिर, हनुमान मंदिर जैसे कई कार्यालय संचालित है। इस सडक़ की चौड़ाई 80 फीट है, जिस पर दुकानदारों के अतिक्रमण से सडक़ की चौड़ाई 20 फीट हो गई है। लोग सडक़ो पर वाहन खड़े करते है। जिससे आवागमन अवरूद्ध होता है एवं दुर्घटना एवं वाद विवाद की स्थिति बनती है। लोगों को भी काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। आये दिन दुर्घटना हो रही है, जो कि वर्ष 2020 से 2024 तक का रिकार्ड थाना में दर्ज है। ज्ञापन में मांग की है कि सडक़ किनारे से अतिक्रमण को हटाने की शीघ्र कार्रवाही की जाये।

बांग्लादेश में हिन्दू धर्मावलंबियों पर अत्याचार के विरोध में सोहागपुर बंद रहा, निकाली रैली, ज्ञापन सौंपा

सुबह सवेरे सोहागपुर। आज बंगलादेश में हिन्दू धर्मावलंबियों पर अत्याचार, मंदिरों में तोड़फोड़, घरों, दुकानों में मार-पीट आदि को लेकर सकल हिन्दू समाज ने दोपहर दो बजे तक बाजार बंद रखा। उल्लेखनीय है कि नगर हर क्षेत्र में बंद का असर देखा गया। जिसमें चाय पान की दुकानों वालों ने अपनी दुकानों को बंद रखकर विरोध प्रकट किया। इसी संदर्भ में शास्त्री चौक से विशाल रैली निकाली गई। रैली पलकमती नदी पुल, श्रीराम चौराहा, कमानिया गेट, बिहारी चौक, कन्या शाला, पुराने हास्पिटल से होकर पुराने थाने के पीछे रानी लक्ष्मीबाई मंच पर सभा के रूप में परिवर्तित हुई। सक्षम संस्था प्रदेश उपाध्यक्ष आशीष चटर्जी ने मुख्य वक्ता के रूप में संबोधित किया। इस अवसर पर संत समाज ज्ञानी सुरजीतसिंह, कैलाश परसाई, पंडित नीलेश जैन, अनिल जैन, भूरेलाल कहार, चप्पू योगी आदि मंचासीन थे। जन-समुदाय को संबोधित करते सक्षम के प्रांत उपाध्यक्ष डॉ आशीष चटर्जी ने बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार पर प्रकाश डाला उन्होंने कहा कि जब से शेख हसीना सरकार को कट्टरपंथियों के द्वारा सुनियोजित ढंग से धराशाई किया गया है तब से ही वहां पर हिंदुओं पर क्रूरता, बर्बरता अत्याचार बढ़ना शुरू हुए हैं। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन के पश्चात उत्पन्न अराजकता का माहौल उत्पन्न हुआ है। लोकतंत्र और कानून व्यवस्था पूरी तरह से चरमरा गई

है। इस राजनीतिक अस्थिरता का सबसे अधिक खामियाजा हिन्दू, बौद्ध, सिख और ईसाई समुदायों को भुगतना पड़ रहा है। कट्टरपंथी इस्लामिक ताकतें इस अवसर का लाभ उठाते हुए अल्पसंख्यकों को निशाना बना रही है। वहां मुस्लिम कट्टरपंथियों के द्वारा अल्पसंख्यकों के धार्मिक स्थलों पर हमले, महिलाओं और बच्चों पर अत्याचार , श्मशान भूमि पर कब्जा, किशोरियों का अपहरण और धर्मांतरण, हिन्दू महिलाओं को निशाना बनाकर सामूहिक बलात्कार की घटनाएं, अनाथालयों में रह रहे हिन्दू बच्चों की तस्करी, उन्हें बाल मजदूरी और यौन शोषण का शिकार बनाने, हिन्दू व्यापारियों की दुकानें और संपत्तियां लूटी जाना, हिंदुओं के घरों को आग के हवाले करने जैसी बर्बरताएं की जा रही हैं। जो कि मानवता के मूल्यों पर प्रहार हैं। कार्यक्रम के अंत में राष्ट्रपति को संबोधित करते तहसीलदार राकेश खजूरिया को ज्ञापन सौंपा गया।

ज्ञापन में

राष्ट्रपति से भारत सरकार बांग्लादेश सरकार के साथ संवाद स्थापित कर हिन्दुओं और अन्य अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने, संयुक्त राष्ट्र और अन्य मानवाधिकार संगठनों में इस मुद्दे को उठाकर वैश्विक दबाव बनाया जाने, पीड़ितों के लिए राहत और पुनर्वास योजनाएं बनाए जाने एवं बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के नागरिक अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित किए जाने की मांग की गई है।वहीं बांग्लादेश के विरुद्ध जमकर नारेबाजी की गई। कार्यक्रम का संचालन जीवन दुबे ने किया । आभार श्रीकांत पटेल ने व्यक्त किया।

इस अवसर वरिष्ठ अधिवक्ता चौधरी माधव सिंह,जनपद अध्यक्ष जालम सिंह पटेल, पूर्व नपाध्यक्ष संतोष मालवीय,कृष्णा पालीवाल, पूर्व नपाध्यक्ष अभिलाषसिंह चंदेल, शोभापुर भाजपा मंडल अध्यक्ष ललित पटेल,नगर पंचायत परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि यशवंत पटेल,अंजनी पटेल, राघवेंद्र पटेल, वकील शिवकुमार पटेल,विशाल राठौड़ राघवेंद्रसिंह पटैल सहित सैकड़ों नागरिक उपस्थित थे। सकल हिन्दू समाज ने समस्त व्यापारी बंधुओं का, नागरिकों का, पुलिस प्रशासन का, सभी धार्मिक, राजनीतिक संगठनों का आभार व्यक्त किया है।

बांग्लादेश में हिन्दुओं पर अत्याचार का जिले में विरोध

बैतूल। बांग्लादेश में कट्टरपंथियों द्वारा मंदिरों को जलाने एवं हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार की घटनाओं के विरोध में सकल हिंदू समाज ने बड़े स्तर पर प्रदर्शन किया। बैतूल में न्यू बैतूल स्कूल से एक विशाल रैली निकाली गई, जिसमें सांसद डीडी उईके, जनअभियान परिषद के उपाध्यक्ष मोहन नागर, बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल, नगरपालिका बैतूल अध्यक्ष पार्वती बारस्कर, भाजपा जिलाध्यक्ष बबला शुक्ला समेत बडी संख्या में पुरुष, महिलाओं और युवाओं ने भाग लिया। यह रैली नारे लगाते हुए लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम में समाप्त हुई। जहां बैतूल सकल हिंदू समाज द्वारा राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन बैतूल एसडीएम राजीव कहार को ज्ञापन सौंपा।

बेअरलॉकर एडिटिव्स इंडिया द्वारा दृष्टिहीन कन्या शाला में लगाये सोलर सिस्टम का जिलाधीश के हाथों हुआ लोकार्पण

देवास/मोहन वर्मा। मंगलवार को दिव्यांग दिवस के अवसर पर दृष्टिहीन कन्या शाला में आयोजित एक गरिमामयी कार्यक्रम में जिलाधीश श्री ऋषव गुप्ता ने बेअरलॉकर एडिटिव्स इंडिया द्वारा वहां लगाए गए सोलर सिस्टम का विधिवत लोकार्पण किया। बेअरलॉकर एडिटिव्स इंडिया के प्रबंधक प्रवीण शर्मा ने बताया कि प्रशासन ने उद्योगों को निर्देशित किया था कि वे अपने सीएसआर फंड का उपयोग जिले के विकास और जरुरतमंदों की बेहतरी के लिए करें। इसी तारतम्य में बेअरलॉकर ने मांग पर बीते दिनों माता टेकरी, जिला अस्पताल तथा दृष्टिहीन कन्या शाला में सोलर सिस्टम लगाये है। आज दिव्यांग दिवस के अवसर पर दृष्टिहीन कन्या शाला में लगे सोलर सिस्टम का जिलाधीश श्री ऋषव गुप्ता के हाथों लोकार्पण किया गया। जिलाधीश ने इस अवसर पर बेअरलॉकर उद्योग द्वारा किए जा रहे सहयोग की सराहना की।

उल्लेखनीय है कि बेअरलॉकर एडिटिव्स इंडियाः उद्योग द्वारा जिलाधीश के मेरी शाला सम्पूर्ण शाला अभियान में भी विगत वर्ष 400 फर्निचर सेट स्कूलों में भेंट किए जा चुके है तथा इस साल भी जिले के ग्रामीण अंचलों के स्कूलों में 1000 फर्नीचर सेट देने का लक्ष्य है। लोकार्पण के इस अवसर पर पंचायत सीईओ हिमांशु प्रजापति,एएसपी जयवीरसिंह भदौरिया, बेअरलॉकर उद्योग के एचआर हेड अभिनव जाधव, हीरेश ओझा, किशनसिंह कुशवाह, शीशराम जाट, विनोद यादव दृष्टिहीन कन्या शाला के अमिताभ तिवारी, बलजीत सिंह सलूजा, राजेन्द्र मूंदड़ा,दिलीप चौधरी,गंगासिंह सोलंकी,राधेश्याम सोनी,राज्य आनंद संस्थान समन्वक समीरा नईम,एक्ट ईव फाउंडेशन अध्यक्ष मोहन वर्मा,सिविल सर्जन डॉ बसंत सारस्वत, नगर निगम उपायुक्त देवबाला पिपलानिया, गुरुचरण सलूजा,विकास विश्वकर्मा सहित अनेक गणमान्य उपस्थित थे।

कांग्रेस सेवादल प्रदेश अध्यक्ष जल सत्याग्रह करने पर उतारू

गिरजा शंकर शर्मा ने मेडिकल कॉलेज नहीं है कहकर पुराना दर्द कुरेदा

नर्मदापुरम। इटारसी में शासकीय चिकित्सालय में सुविधाओं को लेकर मध्यप्रदेश कांग्रेस सेवा दल के प्रदेश अध्यक्ष गजानन तिवारी पत्रकारों के समक्ष चिकित्सा अभाव की बात करते करते रो पड़े.. श्री तिवारी ने कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी चिकित्सालय के निकट मेरा घर है प्रतिदिन अस्पताल में मरीजों के साथ होने वाले हालात देखकर दिल रो पड़ता लेकिन अस्पताल के जिम्मेदारों को मरीजों और उनके परिजनों पर रहम नहीं आता, मरीजों को अस्पताल से अनावश्यक रेफर किया जाता है। इससे मरीज के परिजनों का बुरा हाल होता है। श्री तिवारी कहते हैं कि इटारसी का सरकारी अस्पताल रेफर केंद्र बनकर रह गया, वहां उपचार करने के लिए कोई स्पेशलिस्ट डॉक्टर उपलब्ध नहीं है । श्री

तिवारी बताते हैं कि पूर्व में उन्होंने कई दफा प्रशासनिक जबावदारों को हड़ताल करके, आवेदन के जरिए अवगत कराया है लेकिन अबतक कोई कार्रवाई नहीं हुई। कार्रवाई करने का केवल आश्वासन ही दिया गया है। इटारसी में 7 करोड़ की बिल्डिंग तैयार हो गई है पर उदघाटन के पहले ही वह बिल्डिंग जगह जगह से टूट फूट रही। चिकित्सालय में डीप फ्रीजर तक नहीं है, डेड बॉडी ऐसे ही पड़ी रहती है। जिससे चारों तरफ दुर्गंध फैली रहती है। सत्याग्रह करने जा रहे श्री तिवारी ने कहा कि सत्याग्रह में कांग्रेसी कार्यकर्ताओ सहित आमजन भी शामिल होंगे। मुख्यालय पर होने जा रहे सत्याग्रह आन्दोलन को लेकर जानकारी दे रहे पूर्व कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष अजय सैनी ने इस दौरान उन्होंने कहा कि यहां आयुष्मान कार्ड से भी इलाज नहीं हो रहा है जिससे जनता परेशान हो रही है। कांग्रेस प्रत्याशी रहे पं.गिरजा शंकर शर्मा ने इस मौके पर कहा कि जिले की चारों सीटों पर भाजपा के विधायक हैं, और भाजपा के ही दो सांसद इसके बावजूद मेडिकल कॉलेज हमारे जिले में नहीं बन ना ही हमारे संभाग में बना है। मुख्यमंत्री के क्षेत्र में मेडिकल कॉलेज बन रहा है बाकी जगह उपेक्षित किया जा रहा है।

डॉ. रानू वर्मा फिर बने आरएमओ

बैतूल। जिला अस्पताल बैतूल में लगभग 5 माह बाद एक बार फिर आरएमओ पद पर डॉ. रानू वर्मा को पदस्थ किया गया है। सिविल सर्जन डॉ. जगदीश घोरे ने कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी से अनुमोदन के बाद मंगलवार को डॉ. रानू वर्मा को आरएमओ बनाए जाने के आदेश जारी किए हैं। जिला अस्पताल बैतूल में डॉ. रानू वर्मा लंबे समय तक आरएमओ पदस्थ रहे थे। विगत 26 जुलाई को सीएमएचओ डॉ. रविकांत उइके ने अस्थि रोग विशेषज्ञ डॉ. रूपेश पद्माकर को आरएमओ का प्रभार दिया गया था। जिला अस्पताल में 30 नवम्बर को सिविल सर्जन डॉ. अशोक बारंगा के सेवानिवृत्त होने के बाद सिविल सर्जन बनाए गए डॉ. जगदीश घोरे ने जारी आदेश में डॉ. रानू वर्मा को आरएमओ पदस्थ किया है।

हम संगठित होंगे तो जिहाद को हम दबा सकेंगे : महंत नृसिंह दास जी महाराज

बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार के विरोध में हजारों हिंदुओं का एकत्रीकरण

धार। बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार और हत्याओं को लेकर जिले के सकल हिंदू समाज ने एकजुटता दिखाई। इस प्रदर्शन का गवाह बना धार का उदय रंजन क्लब मैदान, जहां हजारों हिंदुओं ने यह संदेश दिया कि वे एक हैं और बांग्लादेश के हिंदुओं के साथ हैं। इस महान संकल्प शक्ति के आयोजन में मातृशक्ति बड़ी संख्या में उपस्थित रही। इस मौके पर हिंदू समाज द्वारा आयोजित धरना सभा को संबोधित करते हुए मांडू के महंत नृसिंह दासजी महाराज ने कहा, 'हम संगठित होंगे तो जिहाद को हम दबा सकेंगे। हम एकजुट होकर खड़े रहेंगे तो हम अपने बांग्लादेशी हिंदू भाइयों के साथ खड़े रहेंगे। उन पर होने वाले अत्याचार वास्तव में धर्म के खिलाफ हैं और हमारा यही संकल्प है कि अधर्म का नाश होंगा। महंत नृसिंह दास जी महाराज ने बुधवार को यहां बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार को लेकर आयोजित विशाल धरना प्रदर्शन को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि विश्व में भारत हमेशा विश्व गुरु रहा है और रहेगा। हम यह सुन रहे हैं कि 'हम बंटेंगे तो कटेंगे,' लेकिन आज हमें संकल्प लेना है कि हम बंटेंगे नहीं, यह हमें तय करना है। सकल हिंदू समाज

की शक्ति के संगठित रहने के लिए हमें हमेशा तत्पर रहना होगा। यह भय हमारे प्रति है कि जब हम एक होंगे, तो विश्व का क्या होगा? इस सृष्टि पर संपूर्ण राज्य हिंदू का ही रहा है। हर जगह हम सनातन संस्कृति को लेकर विश्व के हर पटल पर खड़े रहे हैं और विश्व गुरु के रूप में खड़े रहे हैं। लेकिन कहीं ना कहीं हमारी इन शक्तियों को दबाने के लिए, हमारे अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न लगाने के लिए हम पर समय-समय पर यह अत्याचार हुआ है।'

भारत देश की नारी को रणचंडी बनना होगा: इसके पूर्व सभा को संबोधित करते हुए अमृता

दीदी ने कहा, 'बांग्लादेश में हिंदुओं पर नरसंहार हो रहा है, वहां महिलाओं की अस्मिता लूटी जा रही है। ऐसे में भारत देश की नारी को रणचंडी बनना होगा, और यदि मातृ शक्ति रणचंडी बन गई, तो हम बांग्लादेश में हमारी हिंदू बहनों के साथ होने वाले अत्याचारों को नहीं होने देंगे। यह राम का देश है, यहां हम संगठित हैं, तो हमारे लोगों को प्रताड़ित नहीं होने देंगे। इसके लिए जागरण बहुत जरूरी है। यह राजा भोज की नगरी है और यहां से जो जागरण होगा, वह न केवल देश में बल्कि दुनिया तक पहुंचेगा।'

22 प्रतिशत हिंदू थे, लेकिन अब 7 प्रतिशत हिंदू ही रह गए हैं: हिंदू समाज के आयोजन में ललित कोठारी ने कहा, बांग्लादेश में जो घटनाएं हो रही हैं, हम सभी उनसे परिचित हैं। न केवल बांग्लादेश में, बल्कि भारत में भी कट्टरवादी ताकतें अत्याचार कर रही हैं। इसलिए हमें एकजुट होना होगा। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश में एक समय 22 प्रतिशत हिंदू थे, लेकिन अब हम 7 प्रतिशत हिंदू ही रह गए हैं। इसी तरह की स्थिति चिंताजनक है। पूरी दुनिया में ईसाइयों के लिए बड़ी संख्या में देश हैं। इसी तरह से मुसलमानों के लिए 57 से अधिक देश हैं, लेकिन हिंदुओं के लिए केवल एक भारत देश है। इस भारत देश को ही बांग्लादेशी हिंदुओं की भी रक्षा करनी होगी। हमें संकल्प लेना होगा कि हम एक रहेंगे।

जात-पात की भर दो खाई... हिंदू हम सब भाई भाई : इस अवसर पर कपिल निनामा ने भी अपना संबोधन दिया। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश में जो हिंदुओं के साथ अत्याचार हो रहा है, इसका

श्री रामकृष्ण आश्रम भोपाल का शीतकालीन राहत कार्य

सुबह सवेरे सोहागपुर। श्री रामकृष्ण परमहंस आश्रम भोपाल के तत्वावधान में आदिवासी क्षेत्रों में शीतकालीन राहत कार्य निरंतर निर्बाध चल रहा है। इसी क्रम में श्री रामकृष्ण परमहंस आश्रम भोपाल के सचिव स्वामी नित्यज्ञानानंद के मार्गदर्शन में अनुसूचित जनजाति छात्रावास सेमरीहरचंद सिद्ध बाबा रोड पर स्थित डोब, सिद्ध क्षेत्र,ढोगरापुरा, खारदा आदि में 250 छात्र एवं छात्राओं को स्वेटर तथा 300महिला एवं पुरूषों को कम्बल तथा गरम जेकेट प्रदान किए गए।

मंत्रीगण करें उपार्जन केन्द्रों का अवलोकन : मुख्यमंत्री यादव

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कैबिनेट बैठक के पहले मंत्रीगण को संबोधित करते हुए कहा कि सोयाबीन और धान खरीदी के लिये बनाये गये उपार्जन केन्द्रों का अवलोकन करें। उन्होंने कहा कि उपार्जन में किसानों को यदि कोई समस्या आ रही है, तो संबंधित विभाग के संज्ञान में लायें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि प्रदेश में 25 अक्टूबर से सोयाबीन का उपार्जन हो रहा है। उपार्जन 31 दिसम्बर तक होगा। अब तक 77 हजार से अधिक किसानों से 2 लाख 4 हजार मीट्रिक टन सोयाबीन का उपार्जन किया जा चुका है। प्रतिदिन लगभग 20 हजार मीट्रिक टन सोयाबीन की आवक हो रही है। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविन्द सिंह राजपूत ने बताया कि 2 दिसम्बर से धान का उपार्जन शुरू हो चुका है। अब तक 428 किसानों से 2810 मीट्रिक टन धान का उपार्जन हो चुका है। धान के उपार्जन के लिये अभी 1184 उपार्जन केन्द्र बनाये गये हैं। लगभग 7 लाख 68 हजार किसानों द्वारा धान उपार्जन के लिये ऑनलाइन पंजीयन कराया गया है। उन्होंने बताया कि 4 दिसम्बर तक 97 हजार से अधिक किसान उपार्जन केन्द्रों पर उपज विक्रय के लिये स्लॉट बुक करा चुके हैं। जिला बालाघाट में 859, सतना में 519, सिंगरौली में 252, मंडला 205, बैतूल 173, अनूपपुर 171, कटनी 149, रीवा 135, मैहर 111, सागर 61, शहडोल 43, सीधी 42, नरसिंहपुर 30, नर्मदापुरम 28, पन्ना 25, दमोह 6 और जिला मऊगंज में 1 मीट्रिक टन धान की खरीदी हो चुकी है।

उप नगर बैरागढ़ में दुकान में लगी आग

भोपाल। वार्ड 2 अंतर्गत सिटीओ क्षेत्र की इलेक्ट्रॉनिक दुकान में कैलाश नगर पानी की टँकी के पास में लगी आग लगई जिससे दुकान में रखा सारा माल जलकर खाक हो गया। मौके पर पहुँची दो फायर दमकलों ने आग पर काबू पाया।

नवविवाहित आत्महत्या मामला पति, सास-ससुर दोष मुक्त

- अपर सत्र न्यायालय रीवा का फैसला

रीवा। अभियोजन कहानी के अनुसार पुलिस थाना सिविल लाइन रीवा में अपराध क्रमांक 393/2023 में नव विवाहिता आतुफ़ा सिद्दीक़ी ने दहेज की प्रताड़ना से तंग आकर 04 जुलाई 2023 फ़ाशी लगाकर आत्महत्या कर ली, जिस पर आरोपी पति सारिक, देवर आरिफ़, सास जुवेदा,के ख़िलाफ़ अपराध धारा 304 बी आईपीसी के अंतर्गत मामला पंजीबद्ध किया जाकर गिरफ़्तार किया गया आरोपीगण के मामले का विचारण माननीय चतुर्थ अपर सत्र न्यायाधीश पदमा जाटव जी की द्वारा किया जाकर आरोपीगण को दोषमुक्त घोषित किया गया, आरोपीगण की ओर से पैरवी अधिवक्ता विक्रम सिंह विसेन एवं अधिवक्ता राजीव सिंह परिहार (शेरा सिंह) ने की।

आर बी आई 90 क्विज़- जोनल राउंड सम्पन्न

इंदौर। भारतीय रिजर्व बैंक अपनी स्थापना के 90 वर्ष के परिचालन का उत्सव मना रहा है। इस उपलक्ष्य में बैंक द्वारा मनाए जाने वाले समारोहों की एक कड़ी के रूप में स्नातक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों के लिए आरबीआई 90 क्विज़ देश भर में आयोजित किया जा रहा है। इसी क्विज का चौथा जोनल राउंड इंदौर के होटल मैरियट में 3 दिसंबर, 2024 को आयोजित किया गया। इस जोनल राउंड में छत्तीसगढ़, गोवा, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान के राज्य स्तरीय विजेताओं की उत्साहपूर्ण भागीदारी देखी गई। सशस्त्र सेना चिकित्सा महाविद्यालय , पुणे, महाराष्ट्र की विजेता टीम, जिसमें श्री प्रियांशु महर और श्री उदय तेज सिंह शामिल हैं, ने आगामी 6 दिसंबर, 2024 को मुंबई में आयोजित होने वाले आरबीआई 90 क्विज़ के राष्ट्रीय दौर में अपना स्थान सुरक्षित कर लिया, जहाँ वे अन्य जोनल राउंड के विजेता टीमों के विरुद्ध खिताब हासिल करने के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगे। गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, गांधीनगर, गुजरात और बिट्स पिलानी - केके बिरला, गोवा की टीमों ने क्रमशः दूसरा और तीसरा स्थान हासिल किया। शीर्ष तीन टीमों ने क्रमशः 5 लाख, 4 लाख और 3 लाख के नक़द पुरस्कार जीते। इस अवसर पर भारतीय रिजर्व बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री अजय कुमार ने वित्तीय साक्षरता के माध्यम से धन के निवेश के बारे में विवेकपूर्ण निर्णय लेने के लिए युवाओं को ज्ञान और कौशल विकसित करने और इस संबंध में दूसरों को भी शिक्षित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने आरबीआई कहता है शीर्षक वाले मल्टीमीडिया अभियानों के माध्यम से जनता के बीच वित्तीय जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किए गए प्रयासों पर भी प्रकाश डाला।

मप्र में बनेंगे शारदा लोक और नर्मदा लोक : लोधी

शक्तिपीठ समागम में बोले संस्कृति और पर्यटन मंत्री

भोपाल। मध्यप्रदेश में धार्मिक पर्यटन को बढावा देने के अनेक कार्य किये जा रहे है। हमारी सरकार प्रदेश में धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व के स्थानों को चिन्हित कर 20 धार्मिक और सांस्कृतिक लोको का निर्माण कर रही है। हमारा उद्देश्य ऐसे स्थानों पर धार्मिक तीर्थाटन को विश्वस्तरीय बनाना है। मध्य प्रदेश सरकार शारदा शक्ति पीठ मैहर और नर्मदा शक्ति पीठ का विकास भी शारदा लोक और नर्मदा लोक के रूप मे कर रही है। उन्हें तीर्थाटन और पर्यटन के दृष्टिकोण से विकसित किया जाना चाहिए।

यह बात संस्कृति और पर्यटन मंत्री धर्मेंद सिंह लोधी ने कही। वे वाराणसी में सेंटर फॉर सनातन रिसर्च द्वारा आयोजित शक्तिपीठ समागम पर बोल रहे थे। संस्कृति मंत्री धर्मेंद्र सिंह लोधी ने कहा कि मैं सौभाग्यशाली हूं, कि मैं भारत के हृदय प्रदेश मध्यप्रदेश से आता हूं जहां चार शक्तिपीठ स्थापित है। नर्मदा शक्तिपीठ अमरकंटक, अवंति शक्तिपीठ उज्जैन, काली शक्तिपीठ अमरकंटक और शारदा शक्तिपीठ मैहर। तीर्थाटन और पर्यटन के माध्यम से सभी 51 शक्तिपीठों को एक सर्किट के रूप में विकसित कर इनके धार्मिक और रणनीतिक महत्व को संपूर्ण विश्व में प्रसारित करने का विचार प्रशंसनीय और सनातन को सर्वांगीण सर्वकालिक बनाने का अद्वितीय कार्य है। उन्होंने कहा कि भारत एक धार्मिक उत्कर्ष वाला देश है, इसलिए धार्मिक

पर्यटन की दृष्टि से इन शक्तिपीठों को सर्वांगीण विकास आवश्यक है।

इस कार्य के लिए भारत के सभी प्रातों को भारत सरकार के साथ मिलकर समन्वित प्रयास किया जाना चाहिए, ताकि इन शक्तिपीठों के माध्यम से भारत वर्ष को धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से जोड़कर जनमानस में शक्ति का संचार किया जा सकें। जहां तक ज्योर्तिलिंगों का प्रश्न है। इन ज्योर्तिलिंगो को हिंदू धर्म का मूल माना जाना चाहिए। ये ज्योर्तिलिंग मानवीय चेतना, आध्यात्मिकता और दिव्य शक्ति के केंद्र हैं। 'ज्योति' का अर्थ होता है प्रकाश, क्योंकि ये ज्योर्तिलिंग संपूर्ण जड़-चेतन को अपनी आध्यात्मिक चेतना से प्रकाशित करते हैं। आज काशी की इस पुण्य भूमि से मैं यहां कि जनता और सरकार से आह्वान करता हूं कि उज्जैन के महाकाल लोक की तर्ज पर 'बाबा विश्वनाथ लोक' का निर्माण होना चाहिए।

मैं बाबा विश्वनाथ के दर्शन करने गया था, मैने ज्ञानवापी को भी देखा, वहां की हर दीवार, हर खंभ, हर स्थापत्य, हर चीज चीख-चीख कर कह रही है, कि हम बाबा विश्वनाथ के है। हमें मुक्त कराओं। मुझे विश्वास है कि जिस तरह अयोध्या में बाबरी मस्जिद को जमीदोज कर के रामलला के जन्म स्थान पर प्रभु राम को विराजमान किया गया है। उसी तरह काशी मे भी ज्ञानवापी क अस्तित्व को समाप्त करके बाबा विश्वनाथ से दृष्टो द्वारा छीना गया क्षेत्र उन्हें वापिस किया जाएगा।

एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने

बीएचयू स्वास्थ्य मेले में स्वास्थ्य सेवा में अंतर्विषयक सहयोग पर जोर दिया

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज द्वारा आयोजित दो दिवसीय स्वास्थ्य मेले में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। यह कार्यक्रम एक औपचारिक सेमिनार के साथ संपन्न हुआ, जहां प्रो. सिंह ने चिकित्सा विज्ञान में सतत शिक्षा और अंतर-विषयक सहयोग के महत्व पर जोर दिया। सभा को संबोधित करते हुए, प्रो. सिंह ने स्वास्थ्य सेवा के परिणामों में सुधार के लिए शिक्षा और शोध की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, जीवन निरंतर सीखने का विषय है। छात्रों को चिकित्सा विज्ञान की बारीकियों को समझना चाहिए और गहराई से जुड़ना चाहिए, क्योंकि यही सार्थक स्वास्थ्य सेवा का आधार बनता है। प्रो. सिंह ने आयुष, पंचकर्म और आयुर्वेद के क्षेत्रों में विश्वविद्यालय द्वारा किए जा रहे प्रगतिशील कार्यों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा, मैं यहां हो रहे विकास से अभिभूत हूं। मैं एम्स भोपाल के डॉक्टरों और छात्रों को यहां आने और यहां किए जा रहे शोध और अनुसंधान के बारे में जानने के लिए प्रोत्साहित करूंगा।

आयुर्वेद के महत्व को रेखांकित करते हुए, प्रो. सिंह ने कहा, आयुर्वेद हमारे धार्मिक और वैज्ञानिक विरासत का एक अमूल्य संगम है। यह अन्वेषण और सीखने के लिए अपार संभावनाएं प्रदान करता है। बीएचयू के इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में हो रही नई खोजों का लाभ समाज के सबसे वंचित वर्गों तक पहुंचना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि भारत जैसे विकासशील देश में, स्वास्थ्य क्षेत्र में मौजूदा कमियों को दूर करने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता हैं। स्वास्थ्य मेले के दौरान बीएचयू के इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के निदेशक डॉ. एस. एन. शंखवार भी उपस्थित थे।

सड़क हादसे में बाइक सवार 3 स्कूली छात्र घायल, एक रेफर

बैतूल। बैतूल बाजार स्थित सीएम राइज स्कूल जा रहे बाइक सवार छात्रों को बुधवार रॉन्ग साइड से आ रहे मैजिक वाहन ने टक्कर मार दी। हादसे में तीनों

छात्र घायल हो गए। एक को गंभीर हालत में भोपाल रेफर किया गया है। घटना के बाद मैजिक वाहन चालक ने घायलों की मदद की। पुलिस के मुताबिक, सीएम राइज स्कूल में पढ़ने वाले प्रियांशु वागड़े पिता किसान (16) विवेकानंद वार्ड, दियांशु कमरे (17), अर्पित साहू विश्वनाथ (17) पटेल वार्ड, कक्षा 9वीं और 11वीं के छात्र हैं। बुधवार स्कूल बस चूक जाने से वे बाइक से स्कूल जा रहे थे, तभी बैतूल बाजार के पास ओवरब्रिज के करीब उनकी बाइक एक मैजिक वाहन से जा टकराई।

हादसे में तीनों छात्र गंभीर रूप से घायल हो गए। जिन्हें निजी वाहन से जिला अस्पताल लाया गया। छात्र अर्पित साहू की घटना में जांघ की हड्डी टूट गई। जिसके बाद उसे भोपाल रेफर कर दिया गया था, लेकिन परिजन उसे नागपुर ले गए। दो छात्रों का जिला अस्पताल में इलाज चल रहा है। घटना की जानकारी मिलने के बाद एसडीएम, सीएमएचओ जिला अस्पताल पहुंचे। जहां उन्होंने घायल छात्रों की जानकारी ली। बैतूल बाजार पुलिस घटना की जांच कर रही है।

एम्स भोपाल ने अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांगजन दिवस और पीएमआर विभाग का स्थापना दिवस मनाया

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के नेतृत्व में संस्थान ने अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांगजन दिवस और फिजिकल मेडिसिन और रिहैबिलिटेशन विभाग का स्थापना दिवस मनाया। इस वर्ष की थीम, 'समावेशी और सतत भविष्य के लिए दिव्यांगजनों के नेतृत्व को प्रोत्साहन देना,' एक समतापूर्ण समाज की निर्माण को रेखांकित करती है, जहाँ सभी के लिए सम्मान और बराबर अवसर हों। इस दिवस के महत्व पर प्रो. सिंह ने कहा, यह दिन हमें बाधाओं को तोड़ने और एक समावेशी समाज बनाने की हमारी जिम्मेदारी की याद दिलाता है। दिव्यांगजन व्यक्ति केवल लाभार्थी ही नहीं बल्कि एक स्थायी भविष्य के लिए नेता और सक्रिय योगदानकर्ता भी हैं। वे हमारे समाज की प्रगति में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। यह आयोजन डीन एकेडमिक्स और आयोजन अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) रजनीश जोशी एवं एसोसिएट प्रोफेसर, पीएमआर विभाग और आयोजन सचिव डॉ. विद्रुल प्रकाश पुरी के के नेतृत्व में संपन्न हुआ। इस

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में एनाटॉमी विभाग की प्रमुख डॉ. बर्था ए. डी. रथिनम उपस्थित रहीं। उप निदेशक (प्रशासन), कर्नल (डॉ.) अजीत कुमार ने कार्यक्रम के दौरान अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा किए और जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा, एक संतोषजनक जीवन जीने के लिए, व्यक्ति को नकारात्मकता को छोड़कर सकारात्मकता को अपनाना चाहिए। साथ ही, इसमें डीन रिसर्च, प्रो. (डॉ.) रेहान उल-हक, डीन नर्सिंग और पीएमडी, प्रो. (डॉ.) अमित अग्रवाल, ऑर्थोपेडिक्स विभाग के प्रोफेसर डॉ. जॉन संतोषी, पीएमआर विभाग के सहायक प्राध्यापक, डॉ. अनुराधा दिवाकर शेनॉय और फिजियोथैरेपिस्ट, ऑक्यूपेशनल थैरेपिस्ट, वोकेशनल काउंसलर ने भी भाग लिया। इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों को उनके प्रतिभा और प्रयास के लिए पुरस्कृत किया गया। यह आयोजन पीएमआर विभाग की उस सपने को साकार करने का प्रयास था जिसमें दिव्यांगजनों को व्यापक पुनर्वास सेवाएँ प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर और गरिमापूर्ण जीवन जीने में सक्षम बनाया जाता है।

नगर पालिका बना रही है साप्ताहिक बाजार में व्यवस्था

समतलीकरण के बाद चुनाव डालकर की प्लांटिंग

बैतूल / मुलताई। नगर पालिका नगर के नवीन स्कूल मैदान पर बने साप्ताहिक बाजार स्थल में व्यापारियों और नागरिकों के लिए व्यवस्था के सुधार का प्रयास प्रारंभ कर दिया है। ग्राउंड समतलीकरण के बाद आज नगर पालिका के अमले ने साप्ताहिक बाजार में चुना डालकर दुकानों

और ग्राहकों के लिए व्यवस्थित मार्ग का निर्माण किया। साप्ताहिक बाजार प्रभारी जी आर देशमुख ने बताया कि पूर्व में दुकानदारों द्वारा अपनी सुविधा के हिसाब से बाजार में कहीं पर भी दुकान लगा ली थी। जिसके चलते साप्ताहिक बाजार में पहुंचने वाले नागरिकों को भारी असुविधा का सामना करना पड़ता था। जिसे देखते हुए, व्यवस्था बनाने के लिए जेसीबी से पहले मैदान को समतल कर दिया गया था ।यहां दुकानदारों ने अपनी सहुलीयत के हिसाब से जगह-जगह मुरम पत्थर डालकर चबूतरे बना दिए थे जिसे जेसीबी मशीन से समतल कर दिया गया।बुधवार दोपहर नगर पालिका कर्मचारियों द्वारा नवीन स्कूल मैदान में चुना डाल कर बाजार में आने वाले व्यापारियों और नागरिकों के लिए सुचारू व्यवस्था बनाने का कार्य किया गया।बताया जा रहा है कि यहां विगत कई वर्षों से साप्ताहिक बाजार लग रहा है जिससे स्कूली बच्चों को बड़ी परेशानी उठानी पड़ती है,जिसके चलते कई बार स्कूल प्रशासन द्वारा उच्च अधिकारियों को अवगत भी कराया गया लेकिन कही कोई सुनवाई ना होने से समस्या जस की तस बनी हुई थी।

छात्रों और स्वास्थ्य सेवाओं के हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता दें : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

- मध्यप्रदेश फार्मेसी, पैरामेडिकल और नर्सिंग काउंसिल की समीक्षा की
- मान्यता और परीक्षाओं के संचालन की कार्रवाई शीघ्रता से पूर्ण करें

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने मंत्रालय में मध्यप्रदेश फार्मेसी, पैरामेडिकल और नर्सिंग काउंसिल की समीक्षा की। उन्होंने लंबित मामलों के शीघ्र निराकरण, परिषदों की कार्यप्रणाली में सुधार की दिशा में उठाए जाने वाले कदमों पर विस्तार से चर्चा की। उप मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि सभी प्रक्रियाएं पारदर्शिता और गति के साथ पूरी हों, जिससे छात्रों और स्वास्थ्य सेवाओं के हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा सके। प्रक्रिया में तेजी लाने के लिये टेक्नोलॉजी का प्रयोग करें। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ बनाने के लिए पारदर्शिता, गति और जवाबदेही को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए। बैठक में परिषदों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

सुटेबल कॉलेजों में भर्ती प्रक्रिया के लिए 15 दिसंबर तक पूर्ण करें कार्रवाई: नर्सिंग काउंसिल की समीक्षा के दौरान बताया गया कि 468 आवेदक संस्थानों में से 202 मापदण्डों अनुसार सुटेबल हैं जांच पूरी हो चुकी है, जबकि 97 संस्थान डेफिशिएंट हैं। मानकों की कमी के कारण प्रक्रिया लंबित है। उप मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि लंबित संस्थानों की समीक्षा शीघ्र पूरी की जाए। मापदंडों अनुसार सुटेबल पाए गये कॉलेज में नर्सिंग छात्रों की भर्ती प्रक्रिया के लिए आवश्यक कार्रवाई 15 दिसंबर तक पूर्ण करें। उच्च न्यायालय के निर्देशानुसार अस्पतालों में बेड आवंटन और मान्यता प्रक्रिया को शीघ्रता से पूरा करने के लिए अधिकारियों को तैयार रहने के निर्देश दिए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने मंत्रालय वल्लभ भवन में नर्सिंग कोर्स के विद्यार्थियों की परीक्षाओं के संचालन कैलेंडर की वृहद् समीक्षा की। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि सरकार छात्रों के भविष्य के प्रति संवेदनशील है। उल्लेखनीय है कि उच्च न्यायालय के स्थगन आदेश से छूट मिलने के बाद उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल के निर्देशानुसार नर्सिंग के विभिन्न कोर्स के छात्रों की परीक्षाओं के संचालन का कैलेंडर तैयार किया गया है और परीक्षाओं का आयोजन किया जा रहा है। इससे नर्सिंग के विभिन्न कोर्सेज के 90 हज़ार विद्यार्थी लाभान्वित होंगे।

नर्सिंग के विभिन्न कोर्सेज के 47 हज़ार से अधिक अभ्यर्थियों की परीक्षाएँ हो चुकी हैं आयोजित: उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल के निर्देशानुसार मध्यप्रदेश नर्सिंग काउंसिल द्वारा विभिन्न नर्सिंग पाठ्यक्रमों की लंबित परीक्षाएँ आयोजित की गयी हैं। जिनमें 47 हज़ार से अधिक अभ्यर्थी शामिल हुए हैं। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने निर्देश दिए हैं कि शेष लंबित परीक्षाओं को शीघ्र आयोजित किया जाए।

बांग्लादेश में हो रही हिंसा के विरोध में सर्व समाज का ज्ञापन

जिले भर से हजारों की संख्या में लोग सम्मिलित हुए

देवास। बांग्लादेश में हो रहे नरसंहार के विरोध में देश भर में हो रहे वीरोध प्रदर्शन के साथ ही मालवा निमाड़ के सभी जिलों में प्रदर्शन हो रहे है। इसी क्रम में देवास में सर्व समाज द्वारा एक विशाल प्रदर्शन कर जिला प्रशासन को महामहिम राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन दिया गया।

प्रदर्शन राधागंज स्थित क्लब मैदान में रखा गया, प्रदर्शन के पूर्व संतो एवं समाज प्रमुख द्वारा भारत माता के चरणों में पुष्प अर्पित कर दीप प्रज्ज्वलन किया। इस अवसर पर अनेकों संत एवं विभिन्न समाज प्रमुख प्रतिनिधि मंडल के रूप में मंचासीन रहें, जिनका परिचय दिनेश जी राठौर ने करवाया। इस प्रदर्शन में पूरे देवास जिले से सभी जाति, मत, पंथ एवं समाज के लोग हजारों की संख्या में सम्मलित हुए। संत ब्रह्मचारी श्री प्रकाश अनांद जी महाराज बागदी संगम खातेगांव ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा की बांग्लादेश में किसी एक जाती,पंथ एवं समाज पर अत्याचार नहीं हो रहे है यह अत्याचार सभी जाती, पंथ एवं समाज पर हो रहा है। देवास का सर्व समाज आशा करते हैं कि भारत सरकार इस विषय में सकारात्मक हस्तक्षेप करेगी और बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा के लिए प्रभावी कदम उठाए। उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए हिन्दू जागरण मंच के प्रांत सह संयोजक राजेश जी खत्री ने कहा कि बांग्लादेश भारत का ही हिस्सा था, भगवान कृष्ण को मानने वाले, काली माता की पूजा करने वाले बंगाली समाज वहां के मुख्य निवासी है। 1947 में भारत विभाजन से बने पूर्व पाकिस्तान को 1971 में कट्टरपंथियों के प्रताडना से भारतीय सेना ने मुक्ति दिलाई। आरक्षण विरोधी छात्र आंदोलन से प्रारंभ हुआ घटनाक्रम आज नरसंहार तक पहुच गया।

प्रदेश में बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार का विरोध, प्रदर्शन

भोपाल डिपो चौराहे पर हजारों की संख्या में जुटे लोग; आधे दिन बंद रहे बाजार

इंदौर, भोपाल, जबलपुर सहित प्रदेश के सभी शहरों में निकाली गई आक्रोश रैली

भोपाल/इंदौर/जबलपुर (नप्र)। बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार और तोड़े जा रहे मंदिरों के विरोध में आज प्रदेश के शहरों में प्रदर्शन हो रहा है। प्रदर्शन में हिंदूवादी संगठन, धार्मिक व सामाजिक संगठनों की सहभागिता के साथ आमजन, व्यापारी समेत सभी वर्ग के लोग सम्मिलित होकर जुलूस भी निकाल रहे हैं। इसके साथ ही बुद्धिजीवी वर्ग से कई साहित्यकार, शिक्षक, सेना के पूर्व कमांडर, सेवानिवृत्त अफसर, डॉक्टर, प्रोफेशनल, भी शामिल होकर अपना विरोध जता रहे हैं। भोपाल के कार्यक्रम में भाजपा नेता और सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता अश्विनी उपाध्याय मुख्य वक्ता थे। इंदौर में लाल बाग तक जुलूस निकाला गया।

इंदौर में रैली का रूट पड़ा छोटा

इंदौर में अब तक कि सबसे बड़ी जनआक्रोश रैली निकाली। बांग्लादेश में हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यक पर हो रहे अत्याचार के विरोध में निकली रैली में रूट छोटा पड़ गया। रैली कलेक्टर चोराहे पर पहुंच गई थी, जबकि लोग दशहरा मैदान तक खड़े रहे, ग्रामीण क्षेत्रों से आए लोग लालबाग भी नहीं पहुंच सके। रैली का रूट पड़ा छोटा।

मानव अधिकार की बात करने वाले लोग कहां हैं: कलेक्टर चौराहे पर जनसभा में मुख्य वक्ता खगेन्द्र भार्गव ने कहा कि कुछ, लोग कहते हैं कि यहां रैली करने से क्या होगा। यहां रैली करने से बांग्लादेश में सांत्वना उठेगी, अब इंग्लैंड की संसद में भी हिन्दू अत्याचार की मांग उठने लगी है। जहां- जहां हिन्दू है वहां अब आवाज उठेगी, हिन्दू अत्याचार नहीं सहेगा। जैसा तिरंगा और भगवा यहां लहरा रहा है, वैसा भगवा बांग्लादेश की संसद में लहराया जाएगा। भार्गव ने कहा- कोई अखलाख मरता है, कश्मीर में आतंकवादी मरता है, तो मानव अधिकार आयोग आ जाता है। कसाब और अन्य आतंकवादी पर आंसू बहाने वाले मानव अधिकार के लोग कहा हैं।

भोपाल में प्रदर्शन पर थी खासी भीड़: भोपाल में सकल हिंदू समाज का भारत माता चौराहे पर विराट प्रदर्शन में भीड़ जुट रही है। यहां भगवा ध्वज थामे लोग पहुंचे। ये जय जय श्रीराम के जयकारे लगा रहे। भारत माता चौराहे के पहुंच मार्गों पुलिस तैनात है। भोपाल में बुधवार को सकल हिंदू समाज के आह्वान पर बांग्लादेश में हिंदुओं के साथ हो रही घटनाओं के विरोध में प्रदर्शन किया गया। दोपहर करीब 2 बजे से भारत माता चौराहा पर लोगों के भीड़ एकत्रित हुए थे।

भाजपा अध्यक्ष समेत मंत्री विधायक उपस्थित थे: धरना स्थल बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा, मंत्री विश्वास सारंग, कृष्णा गौर, विधायक रामेश्वर शर्मा, भगवानदास सबनानी, बीजेपी जिलाध्यक्ष समित पचौरी, पूर्व विधायक ध्रुव नारायण सिंह, निगम अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी, सुरेश पचौरी सहित हजारों के तादाद में लोग थे।

भोपाल में आधे दिन बाजार बंद रहे

इस दौरान भोपाल के बाजार आधे दिन तक बंद रहे। बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार के विरोध में व्यापारी भी सड़क पर उतरे। कृषि उपज मंडी में व्यापारियों ने अनाज की खरीदी नहीं की। वहीं, भोपाल का थोक दवा बाजार भी पूरी तरह से बंद है। सभी डिपो चौराहे पर होने वाले प्रदर्शन में शामिल हुए।

टीला जमालपुरा में बाजार बंद कराने पहुंचे कार्यकर्ताओं की झड़प: भोपाल में टीला जमालपुरा में मार्केट बंद करने पहुंचे भाजपा कार्यकर्ताओं से कुछ लोगों की झड़प हो गई। दोनों पक्ष ने एक-दूसरे पर मारपीट के आरोप लगाए हैं।

प्रदर्शन में बड़ी संख्या में साधु-संत शामिल हुए: बांग्लादेश में हो रही हिंसा के विरोध में हुए प्रदर्शन में बड़ी संख्या में साधु-संत शामिल हुए।

कमिश्नर को ज्ञापन सौंपा, रैली का समापन: भोपाल के न्यू मार्केट से रोशनपुरा चौराहे पर 2 किमी लंबी रैली में पहुंचे लोगों ने कमिश्नर संजीव सिंह को ज्ञापन सौंपा। इसके बाद रैली का समापन हो गया।

डिपो चौराहे पर प्रदर्शन के बाद रैली: डिपो चौराहे पर प्रदर्शन के बाद रैली की शुरुआत हुई। रैली रोशनपुरा चौराहे तक पहुँची।

इस नफरत की आग को ठीक करना पड़ेगा: वरिष्ठ एडवोकेट अश्विनी उपाध्याय

प्रदर्शन में शामिल हुए सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ एडवोकेट अश्विनी उपाध्याय ने कहा कि इस नफरत की आग को ठीक करना पड़ेगा।

ये संगठन प्रदर्शन में शामिल

भोपाल में भोपाल चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज, भोपाल किराना व्यापारी महासंघ, थोक दाल-चावल संगठन हनुमानगंज, भोपाल ग्रैंड मर्चेंट एंड ऑयल सीड्स एसोसिएशन गल्ला मंडी शामिल हैं। वहीं, राजधानी किराना व्यापारी एसोसिएशन, थोक तेल व्यापारी एसोसिएशन,ओल्ड भोपाल थोक रेडिमेड होजरी एसोसिएशन भोपाल, भोपाल व्यवसायी महासंघ भोपाल, भोपाल सराफा व्यापारी महासंघ, घोड़ा निक्कास व्यापारी महासंघ, न्यू मार्केट व्यापारी संघ, लोहा बाजार व्यापारी संघ, इब्राहिमपुरा व्यापारी महासंघ, सुभाष चौक व्यापारी एसोसिएशन सहित भोपाल शहर की अन्य व्यापारिक संस्था प्रदर्शन में शामिल हैं।

मुख्यमंत्री को मंत्री काश्यप ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में प्राप्त स्वर्ण पदक किया भेंट

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को केबिनेट बैठक में एमएसएमई मंत्री श्री चेतन्य कुमार काश्यप ने विगत दिनों नई दिल्ली में 'भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला-2024' में भारतीय व्यापार संवर्धन संगठन द्वारा मध्यप्रदेश राज्य मण्डप को सब्जेक्टिव केटेगरी में प्राप्त स्वर्ण पदक और प्रशस्ति-पत्र भेंट किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंत्री श्री काश्यप और उनकी पूरी टीम को इस उपलब्धि पर बधाई दी। उल्लेखनीय है कि इस बार व्यापार मेले की थीम विकसित भारत-2047 थी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मेले का नई दिल्ली में उद्घाटन किया था। इसमें मध्यप्रदेश के विभिन्न स्थानीय उत्पादों सहित 'एक जिला-एक उत्पाद' को प्रमुखता से प्रदर्शित किया गया था। मेले में स्थानीय कलाकारों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। म.प्र. मण्डप को मेले में दर्शकों द्वारा सराहा गया।

महिला प्रधान घर पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है: शिवराज

ग्रामीण विकास मंत्रालय ने ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान योजना भवन के निर्माण के लिए अनुदान को 1 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 2 करोड़ रुपये कर दिया है

भोपाल (नप्र)। केंद्रीय ग्रामीण विकास व कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने आज मीडिया को ग्रामीण विकास मंत्रालय की उपलब्धियों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि आधी आबादी को पूरा न्याय देना, महिला सशक्तिकरण हमारा सबसे प्राथमिक लक्ष्य है। श्री चौहान ने बताया कि इस साल मंत्रालय का बजट 1 लाख 84 हजार करोड़ था उसमें से 1 लाख 3 हजार करोड़ रूपये खर्च कर चुके हैं। प्रधानमंत्री के संकल्प को पूरा करने, ग्रामीण जनता को रोज़गार से जोड़ने और सुविधायें देने के लिए हम दिनरात काम कर रहे हैं। मीडिया के सवालों का जवाब देते हुए श्री चौहान ने कहा कि किसी भी राज्य में मनरेगा व पीएम आवास योजना में कमियां मिलेंगी तो हम कार्रवाई करेंगे, कार्रवाई के लिए हम प्रतिबद्ध हैं। मनरेगा जैसी योजनायें मांग आधारित योजनायें हैं। उसके लिए बजट कम पड़ने पर वित्त मंत्रालय से राज्यों की मांग के आधार पर फिर से पैसा मांगते हैं और वह लगातार रिवाइज़ होता रहता है।

शिवराज सिंह चौहान द्वारा बताई गई मंत्रालय की उपलब्धियां निम्नलिखित हैं:

प्रधानमंत्री आवास योजना - ग्रामीण

श्री शिवराज सिंह चौहान कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण के अंतर्गत मार्च 2024 तक 2.95 करोड़ आवासों के निर्माण का लक्ष्य था, जिसमें से लगभग सभी घर स्वीकृत किए जा चुके हैं 2.67 करोड़ घर पूर्ण हो चुके हैं।

इस कार्यक्रम की सफलता और ग्रामीण घरों की आवश्यकता को महसूस करते हुए आवास योजना का विस्तार किया गया है और आने वाले अगले 5 वर्षों में 2 करोड़ अतिरिक्त आवासों का निर्माण किया जाएगा. ये 2 करोड़ नए घर अगले पांच साल में 3.06 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा की लागत से बनाए जाएंगे। कोई भी पात्र परिवार इस योजना के लाभ से वंचित न रहे इसलिए वर्तमान में 13 एक्सक्लूशन क्राइटेरिया को संशोधित कर 10 कर दिया गया है जिससे कोई भी आवास विहीन परिवार छूटने न पाये। एक्सक्लूशन क्राइटेरिया जैसे मशीनीकृत मछली पकड़ने वाली नाव, रेफ्रीजिरेटर, लैंडलाइन फ़ोन को हटा दिया गया है।

बीजेपी ने तीन जिलों पर एक पर्यवेक्षक नियुक्त किया

मंडल और जिलाध्यक्ष के नाम खोजेंगे; भोपाल में होगी पहली बैठक

भोपाल (नप्र)। इन दिनों बीजेपी के संगठन चुनाव चल रहे हैं। 15 दिसंबर तक मध्यप्रदेश के 1300 मंडलों में मंडल अध्यक्ष और 15 से 31 दिसंबर तक जिला अध्यक्षों के चुनाव होने हैं। संगठन चुनाव को लेकर बीजेपी ने जिला निर्वाचन अधिकारी नियुक्त किए हैं। हालांकि, बीजेपी ने इन्हें मंडल और जिला संगठन पर्व प्रभारी नाम दिया है। संगठन चुनाव प्रभारियों के अलावा बीजेपी ने तीन जिलों में संगठन चुनाव के लिए एक-एक पर्यवेक्षक नियुक्त किए हैं। ये पर्यवेक्षक अपने प्रभार के जिलों में कार्यकर्ताओं और सक्रिय सदस्यों की बैठकें लेकर मंडल अध्यक्ष और जिला अध्यक्षों के लिए नाम निकालेंगे।

इन नेताओं को इन जिलों का बनाया गया पर्यवेक्षक

ग्वालियर नगर, ग्वालियर ग्रामीण, श्योपुर: सुरेश आर्य (पूर्व संगठन मंत्री)
सागर, दमोह, पन्ना: नरेंद्र बिरथरे (पूर्व विधायक)
शिवपुरी, गुना, अशोनगर: अरुण भीमावद (विधायक)
छतरपुर, टीकमगढ, निवाड़ी: सदानंद गोडबोले (पूर्व मेयर)
सतना, मैहर, रीवा: उमेश शुक्ला (पूर्व विधायक)
मऊगंज, सीधी, सिंगरौली: रामलाल रौतेल (पूर्व दर्जा प्राप्त राज्यमंत्री)
शहडोल, अनूपपुर, उमरिया: एससी मोर्चे के महामंत्री नेताम
कटनी, मंडला, डिंडौरी: लता ऐलकर (पूर्व प्रदेशाध्यक्ष महिला मोर्चा)
छिंदवाड़ा, सिवनी, बालाघाट: अलकेश आर्य (जिलाध्यक्ष बैतूल)
पांढुर्णा, बैतूल, हरदा: जयप्रकाश चतुर्वेदी (पूर्व जिलाध्यक्ष)
भोपाल, रायेसन, नर्मदापुरम: राजेंद्र पांडे (विधायक)
विदेशा, राजगढ, भोपाल ग्रामीण: अभिलाष पांडे (विधायक)
विदिशा, राजगढ़, शाजापुर: लता वानखेडे (सांसद)
उज्जेन नगर, उज्जैन ग्रामीण, आगर: भगवानदास सबनानी (विधायक)
रतलाम मंदसौर, नीमच: सीताराम यादव (सदस्य ओबीसी आयोग)
झाबुआ, अलीराजपुर, बड़वानी: सतेंद्र भूषण (पूर्व संगठन मंत्री)
खरगोन, खंडवा, बुरहानपुर: महेंद्र भटनागर

अब आधार लिंक होने पर ही संबल योजना का लाभ

सीएम यादव ने 10,236 मजदूरों के खातों में ट्रांसफर किए 225 करोड़ रुपए

भोपाल (नप्र)। अब मुख्यमंत्री जनकल्याण संबल योजना के हितग्राहियों को सहायता राशि केवल आधार से लिंक होने पर ही मिलेगी। इस योजना में गड़बड़ियों की शिकायत मिलने के बाद नियमों में बदलाव किया गया है। आज, संबल योजना के तहत दी जाने वाली अनुग्रह सहायता के 10 हजार 236 मामलों में श्रमिकों के परिवारों को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 225 करोड़ रुपये की राशि सिंगल क्लिक के माध्यम से ट्रांसफर की। पहली बार आधार से लिंक किए गए श्रमिक परिवारों को सहायता राशि प्रदान की जा रही है। पंचायत एवं श्रम मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल ने मीडिया को बताया कि संबल योजना में अब आधार से लिंक होने पर ही लाभ मिल सकेगा। बजट की कमी नहीं हैं। पिछले दो महीने से हितग्राहियों के आवेदनों पर आधार लिकिंग का काम चल रहा था। पहली बार आधार से लिंक होने के बाद श्रमिक परिवारों को सहायता राशि खातों में ट्रांसफर की जा रही है।

सामान्य मौत पर मिलते हैं दो लाख रुपये

साल 2018 में असंगठित श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए यह योजना शुरू की गई थी। इसमें पंजीकृत श्रमिकों को अंत्येष्टि सहायता के लिए 5,000 रुपये, सामान्य मृत्यु के मामले में 2 लाख रुपये, दुर्घटना में मौत पर 4 लाख रुपये, आंशिक दिव्यांगता में 1 लाख रुपये और स्थायी दिव्यांगता में 2 लाख रुपये की सहायता राशि दी जाती है।

2.57 लाख परिवारों को मिल चुकी है अंत्येष्टि सहायता

- इस योजना में अब तक 1 करोड़ 75 लाख 22 हजार श्रमिक पंजीकरण करा चुके हैं।
- 2 लाख 57 हजार 470 श्रमिक परिवारों को अंत्येष्टि सहायता मिल चुकी है।
- 2 लाख 89 हजार 791 परिवारों को अनुग्रह सहायता प्रदान की जा चुकी है।

शपथ से पहले फडणवीस ने महाकाल से भस्म-प्रसाद बुलाया

पुजारी को फोन कर शपथ समारोह में शामिल होने का न्योता दिया, आज रवाना होंगे

उज्जैन (नप्र)। महाराष्ट्र में नए मुख्यमंत्री का शपथ ग्रहण समारोह 5 दिसंबर को होगा। देवेंद्र फडणवीस मुख्यमंत्री पद की शपथ लेगे। शपथ समारोह से पहले फडणवीस ने महाकाल मंदिर के पुजारी को निमंत्रण देते हुए भस्म और प्रसाद के साथ बुलाया है।

पं.आशीष पुजारी ने बताया कि फडणवीस ने उन्हें खुद फोन कर शपथ समारोह के लिए आमंत्रित किया है। उनके मुंबई आने-जाने के लिए फ्लाइट का टिकट, रुकने और गाड़ी की व्यवस्था भी की गई है। आशीष पुजारी ने बताया कि वे शपथ ग्रहण समारोह के लिए आज शाम को निकलेंगे। अपने साथ महाकाल का प्रसाद, दुपट्टा और रुद्राक्ष की माला लेकर जाएंगे।

महाकाल मंदिर आते रहे हैं फडणवीस: फडणवीस भगवान महाकाल के अनन्य भक्त हैं। पहली बार महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बनने पर भी वे महाकाल का आशीर्वाद लेने उज्जैन आए थे। इसके बाद लगातार यहां आकर पूजन करते रहे हैं।

भस्म और प्रसाद लाने के लिए कहा

आशीष पुजारी ने कहा- देवेंद्र फडणवीस जी के यहां से न्योता आया है। उन्होंने महाकाल की भस्म और प्रसाद लेकर आने के लिए कहा है। आज शाम को मैं यहां से निकल जाऊंगा। कल शपथ ग्रहण समारोह है। कल शाम को या परसों सुबह लौटूंगा।

भोपाल-इंदौर समेत पूरे एमपी में बादल छाए

बर्फीली हवाओं से ग्वालियर-चंबल में ठिठुरन, फेंगल तूफान ने 6 डिग्री तक बढ़ाया रात का पारा

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में इस समय 2 तरह का मौसम है। 'फेंगल' तूफान की वजह से प्रदेश में बादल छाए हुए हैं और रात का टेम्परेचर 6 डिग्री तक बढ़ गया है। दूसरी ओर, बर्फीली हवाओं की वजह से ग्वालियर-चंबल ठिठुर रहे हैं। अगले 2-3 दिन तक तूफान का असर रहेगा। बादल छाए रहेंगे और रात के तापमान में बढ़ोतरी होगी। इसके बाद पूरे प्रदेश में फिर से सर्दी बढ़ जाएगी। मौसम वैज्ञानिक वीएस यादव ने बताया,जब भी बादल रहते हैं तो रात के तापमान में गिरावट की बजाय बढ़ोतरी होती है। इस समय भी ऐसा ही मौसम है। पिछली 2 रात से भोपाल, उज्जैन, इंदौर समेत कई शहरों में पारे में बढ़ोतरी हुई है। वहीं, ठिठुरन की वजह सर्द हवाएं हैं। अभी प्रदेश में औसत 8 से 10 किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से उत्तरी हवाएं चल रही हैं।

बादल छाए रहेंगे, पर बारिश के आसार नहीं: मंगलवार को प्रदेश के दक्षिणी हिस्से यानी, छिंदवाड़ा, सिवनी, बैतूल समेत कई जिलों में बादल छाए रहे। मालवा-निमाड़, बुंदेलखंड, बघेलखंड में भी बादल रहे, जबकि मालवा-निमाड़ में भी कभी बादल तो कभी मौसम साफ रहा। वैज्ञानिक यादव के अनुसार, अगले 2 दिन तक बादल छाए रहेंगे, लेकिन बारिश के आसार नहीं है। इंदौर में दो दिन में दिन के पारे में 3 और रात में 4 डिग्री का उछाल आया है।

इन शहरों में रात का टेम्प्रेचर 12 डिग्री से नीचे: सोमवार-मंगलवार की रात प्रदेश के कई शहरों में रात के टेम्प्रेचर में बढ़ोतरी देखने को मिली। उज्जैन में तो 6.2 डिग्री की बढ़ोतरी के बाद तापमान 16 डिग्री पर आ गया। भोपाल में 4.3 डिग्री, इंदौर में 3.3 डिग्री, पचमढ़ी-सागर में 3 डिग्री, रायसेन में 3.4 डिग्री, दमोह में 3.2 डिग्री, उमरिया में 2.1 डिग्री तक टेम्प्रेचर बढ़ गया। मौसम विभाग के अनुसार, सोमवार-मंगलवार की रात में नौगांव में 8.1 डिग्री, पिपरसमा में 9 डिग्री, टीकमगढ़ में 9.5 डिग्री, रीवा में 10 डिग्री रहा। नरसिंहपुर, खजुराहो, रायसेन, सतना, खंडवा, राजगढ़, खरगोन, सीधी में भी पारा 12 डिग्री से नीचे ही रहा। बड़े शहरों की बात करें तो भोपाल में 12.8 डिग्री, इंदौर में 16.5 डिग्री, ग्वालियर में 10.7 डिग्री, उज्जैन में 16 डिग्री और जबलपुर में तापमान 12.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

ट्रेनों में फॉग सेफ डिवाइस लगाई

कड़ाके की ठंड के साथ ही अब कोहरे का असर भी बढ़ेगा। ऐसे में भोपाल मंडल से गुजरने वाली ट्रेनों में रेलवे ने फॉग सेफ डिवाइस भी लगाई है। लोको पायलटों को कुल 341 फॉग सेफ डिवाइस दी गई है। दरअसल, कोहरे के दौरान विजिबिलिटी बेहद कम हो जाती है। जिससे लोको पायलटों के लिए सिग्नल और ट्रैक की स्थिति का सही तरीके से आंकलन करना मुश्किल हो जाता है। ऐसी परिस्थितियों में फॉग सेफ डिवाइस लोको पायलटों की मदद के लिए डिजाइन किया गया है।

इस बार कड़ाके की ठंड और मावठा दोनों गिरेगा

प्रदेश में इस बार 20 दिसंबर से कड़ाके की ठंड का दौर आएगा, जो जनवरी तक बना रहेगा। इन्हीं 40 दिनों में 20 से 22 दिन कोल्ड वेव यानी, सर्द हवाएं की भी स्थिति रह सकती है। सबसे ज्यादा ठंड उज्जैन, ग्वालियर-चंबल संभाग में रहेगी। वजह बर्फीली हवाएं सीधे आना है। दूसरे पखवाड़े में ही मावठा यानी, बारिश भी हो सकती है।